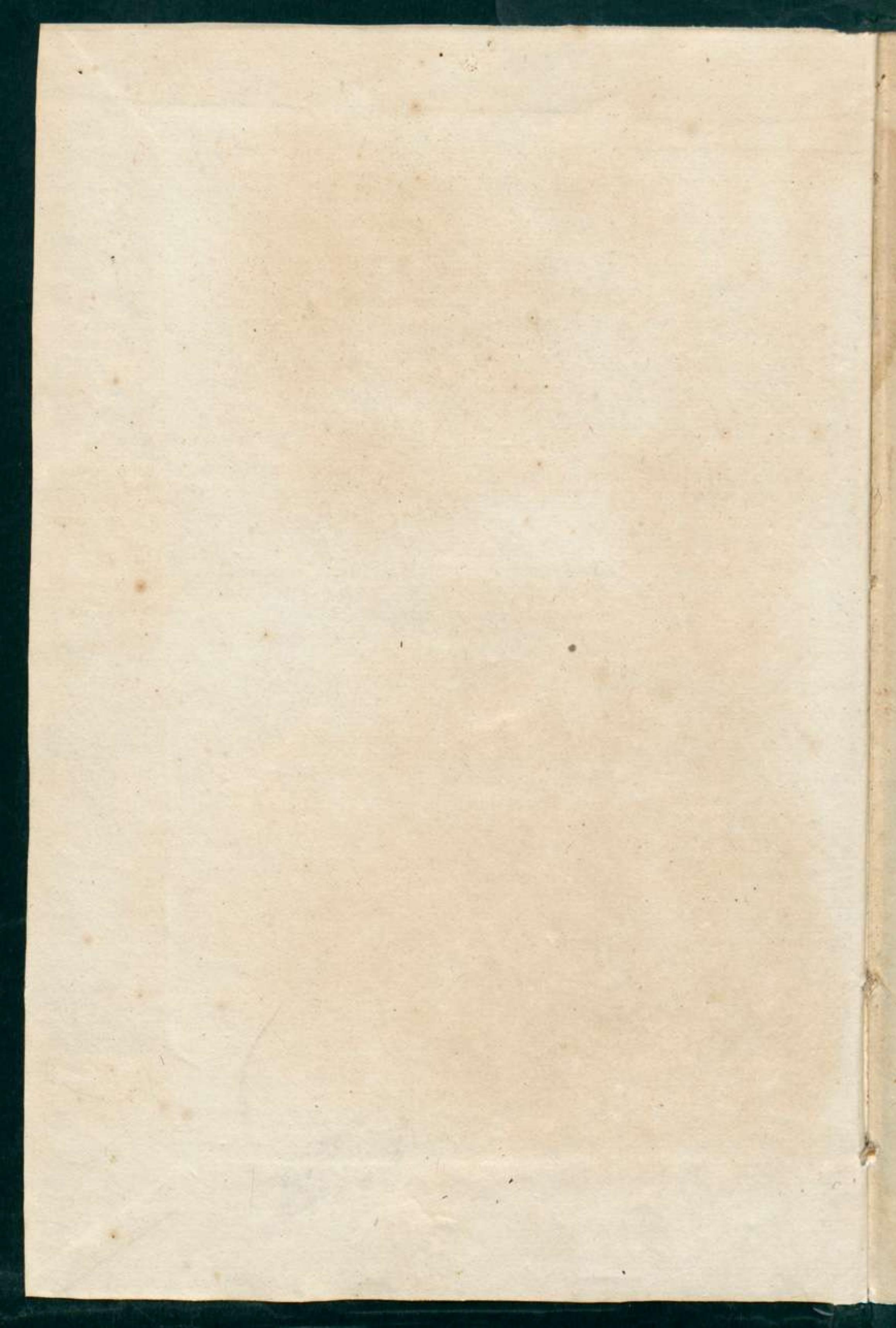


H 10443



10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100  
101  
102  
103  
104  
105  
106  
107  
108  
109  
110  
111  
112  
113  
114  
115  
116  
117  
118  
119  
120  
121  
122  
123  
124  
125  
126  
127  
128  
129  
130  
131  
132  
133  
134  
135  
136  
137  
138  
139  
140  
141  
142  
143  
144  
145  
146  
147  
148  
149  
150  
151  
152  
153  
154  
155  
156  
157  
158  
159  
160  
161  
162  
163  
164  
165  
166  
167  
168  
169  
170  
171  
172  
173  
174  
175  
176  
177  
178  
179  
180  
181  
182  
183  
184  
185  
186  
187  
188  
189  
190  
191  
192  
193  
194  
195  
196  
197  
198  
199  
200  
201  
202  
203  
204  
205  
206  
207  
208  
209  
210  
211  
212  
213  
214  
215  
216  
217  
218  
219  
220  
221  
222  
223  
224  
225  
226  
227  
228  
229  
230  
231  
232  
233  
234  
235  
236  
237  
238  
239  
240  
241  
242  
243  
244  
245  
246  
247  
248  
249  
250  
251  
252  
253  
254  
255  
256  
257  
258  
259  
260  
261  
262  
263  
264  
265  
266  
267  
268  
269  
270  
271  
272  
273  
274  
275  
276  
277  
278  
279  
280  
281  
282  
283  
284  
285  
286  
287  
288  
289  
290  
291  
292  
293  
294  
295  
296  
297  
298  
299  
300  
301  
302  
303  
304  
305  
306  
307  
308  
309  
310  
311  
312  
313  
314  
315  
316  
317  
318  
319  
320  
321  
322  
323  
324  
325  
326  
327  
328  
329  
330  
331  
332  
333  
334  
335  
336  
337  
338  
339  
340  
341  
342  
343  
344  
345  
346  
347  
348  
349  
350  
351  
352  
353  
354  
355  
356  
357  
358  
359  
360  
361  
362  
363  
364  
365  
366  
367  
368  
369  
370  
371  
372  
373  
374  
375  
376  
377  
378  
379  
380  
381  
382  
383  
384  
385  
386  
387  
388  
389  
390  
391  
392  
393  
394  
395  
396  
397  
398  
399  
400  
401  
402  
403  
404  
405  
406  
407  
408  
409  
410  
411  
412  
413  
414  
415  
416  
417  
418  
419  
420  
421  
422  
423  
424  
425  
426  
427  
428  
429  
430  
431  
432  
433  
434  
435  
436  
437  
438  
439  
440  
441  
442  
443  
444  
445  
446  
447  
448  
449  
450  
451  
452  
453  
454  
455  
456  
457  
458  
459  
460  
461  
462  
463  
464  
465  
466  
467  
468  
469  
470  
471  
472  
473  
474  
475  
476  
477  
478  
479  
480  
481  
482  
483  
484  
485  
486  
487  
488  
489  
490  
491  
492  
493  
494  
495  
496  
497  
498  
499  
500  
501  
502  
503  
504  
505  
506  
507  
508  
509  
510  
511  
512  
513  
514  
515  
516  
517  
518  
519  
520  
521  
522  
523  
524  
525  
526  
527  
528  
529  
530  
531  
532  
533  
534  
535  
536  
537  
538  
539  
540  
541  
542  
543  
544  
545  
546  
547  
548  
549  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
570  
571  
572  
573  
574  
575  
576  
577  
578  
579  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
1000  
1001  
1002  
1003  
1004  
1005  
1006  
1007  
1008  
1009  
10010  
10011  
10012  
10013  
10014  
10015  
10016  
10017  
10018  
10019  
10020  
10021  
10022  
10023  
10024  
10025  
10026  
10027  
10028  
10029  
10030  
10031  
10032  
10033  
10034  
10035  
10036  
10037  
10038  
10039  
10040  
10041  
10042  
10043  
10044  
10045  
10046  
10047  
10048  
10049  
10050  
10051  
10052  
10053  
10054  
10055  
10056  
10057  
10058  
10059  
10060  
10061  
10062  
10063  
10064  
10065  
10066  
10067  
10068  
10069  
10070  
10071  
10072  
10073  
10074  
10075  
10076  
10077  
10078  
10079  
10080  
10081  
10082  
10083  
10084  
10085  
10086  
10087  
10088  
10089  
10090  
10091  
10092  
10093  
10094  
10095  
10096  
10097  
10098  
10099  
100100  
100101  
100102  
100103  
100104  
100105  
100106  
100107  
100108  
100109  
100110  
100111  
100112  
100113  
100114  
100115  
100116  
100117  
100118  
100119  
100120  
100121  
100122  
100123  
100124  
100125  
100126  
100127  
100128  
100129  
100130  
100131  
100132  
100133  
100134  
100135  
100136  
100137  
100138  
100139  
100140  
100141  
100142  
100143  
100144  
100145  
100146  
100147  
100148  
100149  
100150  
100151  
100152  
100153  
100154  
100155  
100156  
100157  
100158  
100159  
100160  
100161  
100162  
100163  
100164  
100165  
100166  
100167  
100168  
100169  
100170  
100171  
100172  
100173  
100174  
100175  
100176  
100177  
100178  
100179  
100180  
100181  
100182  
100183  
100184  
100185  
100186  
100187  
100188  
100189  
100190  
100191  
100192  
100193  
100194  
100195  
1001

Reuerendissimo Domino Iacobo Cardinali Papi  
ensi Domitius Veronensis salutem et commen.

Roxime legi Reuerendissime domine  
orationem disuasoriam Venerabilis pa/  
tris Celsi ueronensis Canonici regularis  
in qua cum rationibus / tum etiam exemplis præ/  
clarissimis pluribus uarie copiose atq; ornate rebo  
sacris parcendum et abstinentum esse contendit :  
eam a te qui doctissimus et eruditissimus ab omni  
bus haberis et existimaris ualde probari audio et  
uehementius commendari: Ego quoq; pro hac te  
nuitate mea grauissimum iudicium tuum tati fa/  
cio ut ipse tecum sentiam / ac talem lucubratōnē in  
tegerrimi religiosi imprimendam ex tua sententia  
esse decernam. Cum in uniuersum ad omnes per  
tineat talis causa talisq; disuasio. Christiani enim  
nominis decus / christianæq; religionis ratio præci  
pue custoditur / si inter alia quoq; res sacræ intacta/  
tæ in uiolataq; seruentur. Vale .

Epistola Reuerendissimi domini Hermolai Bar  
bari Episcopi Veronensis ad . D.Celsum Veronē  
sem Canonicū regularē Congregatōis lateranēsis

Eligiosorum decus saluus sis: uno spū le  
gi disertissimam et xpianissimam episto  
lam tuam: in qua legenda tantam cœpi  
uoluptatem / ut nihil suauius / nihil ad explendā  
sanam mērem pinguius audiri aut legi potuisset:  
Quoniam nihil pretermisisti eorū quæ a magnis i  
geniis excogitari / aut a doctis religiosis ad nostros  
homines erudiendos in tanta re afferri potuissent  
omnibus doctrinæ / sanctitatis / auctoritatisq; pre  
fidiis munitus : ad monēdos Venetos viros te ita  
preparasti / ut apud omnes nō minus christianus  
q; doctus et sis et habearis: Adde igitur quæ i mar  
gine annotasti: et perfice opus hoc dignum: ut in i  
ter cetera quæ per omnes tuæ ætatis gradus preco  
nia: in omnibus fere Italiæ urbibus es cōsequutus.  
Hanc etiam dignam laudem in Veneta urbe regi  
na Italiæ ut ita dixerim consequaris: Tanta enim  
ut spero erit dicendi uis / ut si non omnes / saniot  
rem tamen partem i tuam adduces piissimam sen  
tentiam: Nihil falsi locutus es / nihil ueri conticui  
sti ad sanguinos animos moliendos: Et cum oī /

a.ii.

nia summa caritate narraueris i misericors ac mise  
rator dominus magis ac magis assistet huic sancto  
operi; et illuminabit metes et corda omnium ad  
ueritatem agnoscendam relictis tenebris; Nec dese  
ret hanc urbem; quæ tempore lucis sola condita ē:  
Et tot ac tantis sanctorum corporibus ornata ac  
munita: ut nūi q̄ adduci possim illā facile peritu /  
rā tanq̄ summi dei peculiare. Vale et me ut soles  
ama / ac pro me ora . Ex Venetiis pridie kllās Fe  
bruarias.M,cccclxxi .

Tuus filius Hermolaus Episcopus Ve  
ronensis indignus manu propria .

Celsi Veronensis Canonici Regularis Lateranensis cōgregationis Dissuasoria ne Christiani principes Ecclesiasticos usurpent census Ad Inclytū uenetorū Senatū.

Oalent complures sē penumero Sere  
nissime Princeps / Illustrissimeq; Sena  
tus cum de re aliqua tractaturi sunt /  
ea tantum in dicendo sectari / ea pro/  
ferre / ea suo sermone complecti : quæ legentium  
auribus obsequātur: quæ ue gratiam / et inanem si  
bi applausum ualeant aucupari . Contra uero  
quæ recta / quæ utilia / quæ bona sibi et honesta ui  
dentur: ea ueluti minus gratiæ / minusq; oblecta /  
menti ac suavitatis habitura aspernantur et respu  
unt . Ast ego ab his profecto longe aliter sentio .  
Videntur siquidem mihi ii non mediocriter erra /  
re : ac ut ita dixerim / a proposito suo pene decide  
re . Nam dū gloriam sibi ab hominibus ac laudes  
ex turpi quadam mercatura querūt: ignominiam  
magis ac dedectis incurrūt . Quid enim turpius q̄  
sub boni specie amicorum animis fraudes offun  
dere? Quid indecentius q̄ pro ueris ficta ac simul  
lata supponere? Quid inq̄ fedius: et ab omni pror  
fus honestate semotius / q̄ pestiferis assentatoibus

a.iii.

mortalium mentes in multos ac inaximos errores  
inducere? Ii profecto nō amici / non beniuoli / nō  
uiri boni / sed īmanissimi potius hostes / et omniū  
odio digni habēdi sunt. Quis ,n. numeret quot  
mala / quot iacturas / quot pestiferas clades īferāt ?  
Quis īq̄ numeret quot detrimenta / quot dispēt  
dia / quot incōmoda / ac pericula ob istiusmodi af  
sentatorum prava consilia / ac obsequia fraudulē  
ta non priuati solum homines subeant; sed etiam  
uniuersæ res publicæ / ac cunctorum regum impe  
ria? Id uero illis assequi haud profecto difficile ē :  
nam beniuolentiæ et amicitiæ cultu subiecti blan  
dis laudibus / ac fictis obsequiis mētes hominum  
offuscant; fraudes innectunt : et unumquēq; rerū  
suarum ignorantia īnuoluunt: Ut quæ bona ac fa  
lubria / quæ ue sibi noxia ac pestifera sunt minime  
dignoscere queat. Tales etenim se esse arbitrātur  
homines : ut merito īureq; laudentur : Ex quo in  
numerabilia postea peccata nascuntur: et in maxi  
mis illi uersantur erroribus . Quamobrem istorū  
ego impresentiarum sententiam minime sequēdā  
duxi: sed ea magis prosequar / ea audacter enarra /  
re contendam: quæ si minus gratiæ / minusq; sua /  
uitatis forte habitura sint: at profecto nō ficta / nō  
simulata / sed quæ uerum amictū / uerumq; dñeāt

monitorem; ob eamq; rem neq; omnino fortassis  
inutilia; neq; futura prorsus infructuosa . Nam et  
medicorum plerūq; amara sunt pocula: eadem ta  
men frequenter egrotis opem afferunt et salutem:  
Quod sane mihi quoq; arbitror esse faciendum:  
idemq; mihi in hac causa officium eandemq; assu  
mendam ēē personam: quo aptius et facilis salu  
tem pristinam: bonamq; ualitudinē languentibus  
inducam . Ea propter si licentius aliquid dixisse  
uidebor id non odio / non liuore aliquo fieri exi  
stimandum erit : sed ut magis animus tuus serenif  
fime Princeps et eorum qui monitis talibus indi  
gent ad meliora ac salubriora consilia capessenda  
q; efficaciter excitentur . Accipies igitur hanc lu  
cubraciunculam meam satis horrida et inculta ora  
tiōe conscriptā: quam ob meum i te inclytumq; se  
natum singularē amorem / p̄cipuamq; caritatē et  
obseruantiam serenissimo nomini tuo dedicare cō  
stitui : Si quid forte consilii : Si quid utilitatis et  
adiumenti uobis: uestrisq; afflictis rebus non solū  
assiduis orationū suffragiis: Verū etiā crebris uer  
borū exhortatiōibus afferre potuero. Nūc igit̄ ne  
p̄cul nimis nostra aberret oratio dicere aggrediar:  
quæ tecū i p̄sentia mi Serenissime Princeps agere  
istitui: Si tamē illud unū prius subiecero: me idcir

a.iii

eo hoc onus sponte suscepisse : ut nulla in parte  
mihi ipsi pro ingenii mei paruitate desim : quin ea  
suggeram : ea consulam : ea admoneam : quae ad isti  
us uestri incliti clarissimiq; senatus salutem / ac per  
petuā gloriam i his tantis calamitatibus ac pericu  
lis nostris firma certaq; ratione p̄tinere dignosco.

Vm itaq; paucis ante diebus Serenissime  
audire c Priceps religionis meæ gratia uarias urbes  
uariosq; populos peragrare : cōplures s̄æpe  
numero ( ut fit ) præclaros / ac i signes uiros / cōplu  
res illustres / ac excellētissimos prícipes alloquutus  
sum. Inter loquēdū uero i eos ipsos crebro sermo  
nes incidimus : qui nūc maxime per omniū ora uer  
santur et uolitant : De huius scilicet i piissimi tur  
ci Christiani nominis hostis p̄spero fælici q; bello  
rū successu : quibus Christianos insequit uexat at  
q; trucidat : quibus orthodoxā fidem dies noctesq;  
labefactare ac funditus euertere niti. i qua qdem  
re eum iam diu tantū inualuisse tātumq; excreuis  
se cōspicimus / tantas sibi pedestres ac maritimas co  
pias / tot auxilia ac bellicos apparatus sibi cōparas  
se : tantū deniq; aduersus Christianos et Italiā ip  
sam exercitū contraxisse : quantū aduersus Græciā  
olim magnus ille Xerxes : quem mare classibus : ter  
rā uero pedestri exercitu pene operuisse memoriæ

Turcus.

Xerxes.

proditū est. Quo circa tantx potentix et expediti  
onis incredibilis magnitudo unicuiq; non īmerito  
potest ēē formidini . Verū ceteris istiusmodi com  
pluribus inter loquendū in eo sermone a nobis p̄ i  
termisſis ad id unum maxime nostra tandem deflu i  
xit oratio: q̄ magna fuerit | q̄ erumnosa | q̄q; do i  
lenda et non sine lacrymis cōmemorāda recens ue  
stra Euboeæ insulæ clades atq; iactura: qua profe  
cto nulla maior | nulla tristior | nulla uobis | ac  
Christianæ rei Publicæ infælicior accidere pote  
rat . Ex inde namq; non uobis solum ac mari  
timo īperio uestro crudele bellum et extremum di  
scrimen īpendit: Verū etiam Italiæ īpī ac uniuersæ  
fidei nostræ tristis euersio et supremū exitiū p̄para  
tur. Quo circa summopere profecto pertimescen  
dū est: actum iam esse de nomine Christiano: actū  
de fide catholica tot Christi laboribus/ tanto san  
guine: tot cruciatibus constituta. Iam .n. ad radicē  
posita ē securis: i foribus iam adsunt s̄euissimi ho  
stes: iā littora naualib; copiis plena ūdiq; resonat .  
iam nobis nisi e cælo diuinū suffragetur auxilium  
extrema imminet clades / et miserabile naufragiū  
subeundum est. Quis .n. istius īmanissimæ belluæ  
ferocē impetū substinebit? Quis trucem audaciā  
cohercabit? Quis inq; tanta elatū uictoria ab incœ

Euboëa.

Alexander,  
Cæsar.

pro suo deterrere ualebit? Pre multitudine q̄ppe  
hominū ac pre magnitudine uictoriæ partē angu  
stos se fines hēre arbitrabit: nō. n. explet̄ unq̄ aut  
satiaſ regnādi libido: sed q̄to maior imperii fuerit  
accessio: tāto quoq; crescit et augeſ dominandi cu  
pido. Quā ob rē facile admodū sibi p̄suasum erit:  
se se totius italiæ īperio posse q̄doq; potiri; huc p̄/  
fecto uotis omnibus aspirat: ad hoc toto desiderio  
mētis anhelat: ad hoc omēs cogitatōnes suasiomia  
cōſilia/omnē curā animūq; cōuertit. Quæ sane res  
ueluti olim Alexādrū Macedonē/aut Cæsarē illū:  
quos iste potissimū sibi ex omnibus īmitādos dele  
git ad subiugandi totius orbis cupiditatē supra hu  
manū modū euexit: ita hūc quoq; pari mō uehe i  
mēter ipellet ad suū longe lateq; p̄pagādū īperiū:  
ac nominis sui famā p̄clarissimis gestis posteris de  
mādandā: quod ingenuis ac p̄stantibus animis ad  
maximas res obeundas nō mediocre adiumētū afi  
ferre consueuit. Emulatione itaq; gloriæ (ut aiūt)  
parē se illis conaſ ostendere: et eorū exēplo gloriæ/  
ac laudis studio magis ac magis ardere et īflāmari  
uidetur. Ad quod sane nūc eo quidē ipēsius et au  
dius anhelabit: quo latiorē sibi uiā / faciliorēq; ex  
hac recenti uictoria sibi aditū cōparauit. Quas ob  
res (ut multis uideſ) satis quidē iuste hæc Euripi

Euripus.

uestri clades arq; calamitas omniū maxima maxie  
q; deplorāda ē:quā digno uobis ac recto sūmi dei  
iudicio euenisce opinātur /et dictitāt; ppter insol  
tam uestrā sacrarū rerū exactiōē/ac uexatæ religi  
onis iniuriā.Sic profecto et pxime decursis tēpori  
bus pclarissimæ illi totoq; terrarum orbe celeberri  
mæ urbi Constātinopoli:quæ Romani quōdā im  
perii sedes extiterat:ob iniquiorē tamen cām eue i  
nisse meminimus.Nā et si nō sine magno cordis  
dolore ea ifælicissima clades recolēda sit: ob diuti  
nā tamē ac iueteratā græcorū a uera fide discordiā  
haud iniusto optimi dei consilio tā lugubrem cala  
mitatē/ tāq; miserabile excidiū omēs ppeſſam fuſ  
ſe testan̄.Quid Pisanorū euersio ? qui ſupiorib;  
tēporibus tāta potētia tamq; lato iperio gloriabā i  
tur:Nōne tā diu pſpera eis cūcta ſuccellere?tā diu  
iperiū ſuū terra mariq; integrū ſeruauere:quo ad  
rē diuinā ſumma obſeruātia coluerūt.Postq; uero  
i res ſacras/ ac ſūmi dei ministros ipias manus inie  
cere:tū demū multa aduersa/multa icōmoda/ mul  
tasq; ac maximas calamitates ppeſſi ſunt:Adeo ut  
nō ſolū iperiuū iſm turpiter amiferint:Verū ēt ſub  
hostiū misera redacti ſint uirtute . Quo circa nei  
mini ſane mirandum eſt:ſi itidem nunc uobis et  
Ebo eæ insulæ uestræ infæliciter contigit . Vox

Tūlūs ecclī  
ua excepī  
ua Acpī  
ua Epcī  
. obal

Constantino  
polis quare i  
manus Turci

Pifç quare  
Euerfç,

Tristus euenu  
tus expeditio  
nis Achaicę.  
Vnde Euboę  
clades.

q̄ppe oīum ḡtiū ē oīumq; populorū: expeditionē  
uestrā Achaicā tā tristē tāq; ifælicē euētū ob sacra/  
rū rerū exactiōnē sortitā fuisse. Pariq; mō Euripi  
pi uestri cladē nuper acceptā i eādē omēs referunt  
culpā/eādēq; religionis iniuriā. Quā ob rē magno  
pere si recte sentimus/si ad nostrarū rerū inspectō  
nē rōne ducimur /magnopere inq; nobis p̄timescē  
dū ē: si in hoc uestro p̄posito diutius steteritis / ne  
reliquæ ciuitates et iſulæ uestræ eādē sorte subeāt /  
eandēq; vindictā. Neq; n. p̄seuerāte ruinarū causa  
salutē afflictis reb̄o gigni/parari ue posse sperandū  
ē. Hæc itaq; et alta istiusmodi complura ubiq; paſi  
sim frequēter audiui:quæ enumierare lac p̄senti ser  
mone cōplecti uelle lōgi admodū supuacaneiq; es  
set negocii. At nūc id unū sat sit commemorasse:  
multa neq; uario/neq; obſcuro sermone cū maxi/  
ma uestri clarissimi senatus nota atq; dedecore ob  
insuetā istā sacrarū rerū cōpilationē ubiq; p̄ferri.  
Quā ob rē (ut uerū fatear) ob singularē meū erga  
iclitū uestrū diuinūq; senatū amorē et obſeruatiā  
nō mediocriter in doleo uicē uestrā. Vellē ſiq;dē ea  
de uobis ac fælici statu uestro libenter audire:quæ  
ad ſūmā laudē/ſūmāq; gloriā/ac ſplēdorē pertine  
rēt. At magno dolore carere nō possum cū aīad  
uerto quorsum iam inclinet ac deuoluatur illa no

minis uestrī tanta claritas / tantaq; celebritas: quæ  
uniuerso orbe etiam apud remotissimos populos  
incredibilis ferebatur: nec īmerito. Sicut enim mul-  
to antea tempore amplissimis diuitiis / maxima re-  
rum omniū opulentia / summa gloria / summoq;  
splendore hæc præclara ciuitas uestra cæteras ante-  
iuit: ita quoq; mortū honestate / uitæ sanctimonial  
iustitia / fide / pietate / religione / reliquisq; uirtu-  
tibus excellentissime prestitit. Quæ quidem opti-  
mæ disciplinæ postq; obliuioni tradi cœperunt. ita  
quoq; illa nominis uestrī tanta claritas / tantaq; ce-  
lebritas paulatim minui / paulatimq; deleri cœpit  
pariter et extingui. Verū licet ego grauiter et ini-  
quo animo perferā tot clades / tot calatnitates / tot  
uersros infœlices euentus / tot antiquæ gloriæ uestræ  
atq; imperii detrimenta: quæ per totam fere profe-  
runtur Italiæ; nō tamē ab illorū opinione omni-  
no dissentio ( quod bona uenia uestra dictum sit )  
qui insolitâ hanc sacrarum rerum exactiōē / præ-  
cipuam rerum male gestarum causam opinantur.  
Cū. n. nonnūq; mecum iþe cogito: ac priorū tem-  
porū transfacta mête pcurro: i eorum pfecto sentē-  
tiam haud difficile adducor. Videtur siquidem  
mibi ( ut libera fronte loquar ) quæ firma satis et  
explicata ratione sentio inde uobis ac e pestilenti

quodam̄ fonte omnia icōmoda / omnia uobis ad  
uersa manare: Quod palne ita esse unicuiq; aper/  
tum satis erit atq; perspicuum: si clarissimorum fa/  
cinorum memoriam inspectare uoluerit. Quis.n.  
ut rerum gestarum paulo altius initia repetamus  
est tam inscius? Quis tam rerum omniū penitus  
ignarus? Qui nesciat q̄ mirificum / q̄ præclarum  
q̄ q̄ diuinum hæc res.p. uestra i sui primordio ini/  
tium habuerit: q̄ magna deinde atq; excellētia / ac  
supra cōmunē conditarum urbium consuetudinē  
incrementa susceperit? Omnia namq; tanta p̄spe/  
ritate tāq; fœlici rerum omniū successu euenerē:  
ut omnia fere in ea statim pariter excreuisse: et ad  
summū gloriæ fastigiū puenisse uideantur. Nō so/  
lū.n. summis diuitiis preciosarū rerū omniū uarie/  
tate sumptuosissimis magnificisq; tectorū structu/  
ris / incredibili nauīū numero / miroq; ac splēdido  
earū apparatu hanc ciuitatē uestrā breui temporū  
decursu uniuerso orbe celebrem reddidistis: Verū  
etiam lōge lateq; terra et mari imperium uestrum  
propagastis: diutiusq; q̄ ullæ unq; gentes pro sin/  
gulari uestra ac maiorū uestrorū sapiētia integrū  
fœlicissime conseruastis. Adeo ut neq; totius Italiæ  
arma quæ uniuersi orbis domina atq; regina de/  
scribitur ulla ex parte illud unq; labefactare posse

rint. Quæ nam igitur tantarum prosperitatū: quæ tot fœlicissimorum successuum extitit causa? nisi propterea quia nulla unq̄ ciuitas fuit: i qua aut religio magis culta/aut iustitia diutius et sanctius custodita fuerit. Id autē sine adulazione dictum existimari uelim. Videor. n. mihi pro rei merito pa' rum ēt dixisse: et sermonē ipsum superari magnitudine rei. Quis enim nō admiretur? Quis nō sūmis laudibus efferat præcipuū illum singularemq; maiorum uestrorum in diuinis rebus ardorem: maximam et inuiolabilem iustitiam ac religionis obseruantiam: Sūmam erga pauperes Christi munificētiā: Inextimabilē illam erga templorum cultum atq; splendorem liberalitatem? Huiusce uero rei ī hunc usq; diem optima testis est nō modo probatissimorū grauissimorumq; uirorum recēs memoria. Verum etiā id ipsum cumulate declarant ornatiissima templa / ampla ac sanctissimis religiosis referta monasteria: quæ ante actis temporibus ex solis maiorum uestrorum oblationibus et elemosinis constant fuisse constructa . Nam et si semper ī his quæ ad dei cultum ac religionis obsequium et obseruantiam pertinerent liberales haberentur pariter ac deuoti . Cum tamen istius modi calamitatibus premerentur ac talibus afficerentur angustiis:

Mira prisco  
rū Venet orū  
religionis ob  
seruantia .

tum maxime præcipuum sibi e cælo subsidium bo  
nis operibus exposcebant : tū maxime largissimis  
elemosinarum distributionibus magna fide / ma  
gnaq; deuotione deum sibi bonorum omniū lat  
gitorem placare cōtendebant . Quā uero dispara  
et ab illis dissona nunc tēpora subsequuta fuerit :  
q̄q; dissimilis ac pene contraria erga religionē cul  
tumq; diuinum successerit obseruantia/ aliorū nūc  
malim id esse iudicium . Res enim adeo illustri ac  
propatulo sita est loco/ ut facile unicuiq; possit ēē  
perspicua . Sed de his posterius . Nūc redeo ad ma  
iorum uestrorum tempora: qui ut antea diximus  
talibus presidiis cōmuniti tum demum aduersus  
hostes pro statu pro imperio suo bella subibāt: tū  
ad certamen exibant: tum animo intrepido pugnā  
capessebant: neq; prius ad patriam remeabant: q̄  
profligatis deletisq; hostibus uictoriam certam/ ac  
spolia reportarent . Quā ob rem non immerito  
laudatur ille . F. Camillus: qui Populum Romanū  
auctore Liuio ad hoc ipsum plurimum hortabat.  
Intuemini enim inquit Quirites horum deinceps  
annorum secundas res uel aduersas : et omnia pro  
spere diuina nobis sequentibus numina aduenisse  
inuenietis: Aduersa uero et horrida spernentibus  
subsequuta fuisse . Quanto nunc igitur meliore

F. Camillus  
Liuius,

loco staret : Vestra quoq; res publica Serenissime  
Princeps: si maiorum uestrorum erga religionem  
optimas disciplinas/ optimaq; instituta uobis imi-  
tanda proponeretis? Quanto sapientius ac præstā-  
tius regeretur: si eorum summa prudentia / et rerū  
a se bene gestarū exemplo doctiores fieri niterem-  
ni ? Profecto non uos tot bella/ non tot incōmoda  
non tot pericula/ non tot infestarent aduersa: Sed  
ut olim fusis ac circūquaq; debellatis hostibus ue-  
stris uictoriā ac gloria reportaretis trophea . At  
si minus hoc tempore prospere minusq; fælicius  
q; expetitis et optatis uobis res uestræ succedunt :  
mirum sane id nulli uideri debet: cum maiorū ue-  
strorum optimæ sanctōnes parum quidem prudē-  
ter paulatim obliuioni mandari cœperint:cū reli-  
gio ipsa / ac sacerdotum reuerentia lōge minus so-  
lito:minusq; q; uti par erat excolatur in uobis. Sed  
ignoscite oro si quid durius uobis uideor protulis-  
se: ita enim multi īmo pene omnes: qui ratōnis du-  
ctum sequi uoluerint: sentiunt. Ad uestram.n.uti  
litatem omnia ista prosequor: ea propter ad ueniā  
mibi faciliores esse debetis. Sed iam reuertatur un-  
de excidit sermo. Ea itaq; parū docte a uobis sen /  
sim obliuioni tradi antea diximus: et recte quidē .  
Ea nāq; sola fuerunt: quæ uos superiori tēpore ac

b.i.

rem pū. uestrā ad tantā sublimitatē/ ad tantā glo /  
riam/tantūq; splendorē fœliciter euexerunt. Quā  
ob rē haud iniuria desiere nunc fœlices uestri suc  
cessus:desiere antiqua trophea:desiere pristini uic  
toriarū triumphi:desinere cœpit et tātæ uestræ glo  
riæ claritas:desinere deniq; cœpit et illa pariter no  
minis uestri tanta auctoritas/ tātaq; maiestas:quæ  
toto orbe haud obscure celeberrima uagabatur  
quæ cunctis populis/et gentibus uniuersis regibus  
atq; principibus nō īmerito admirationi esse pote  
rat atq; formidini. Nūquid nō ista ppenditis Cla  
rissimi Veneti?Nū quid nō ista cogitatis?Nū quid  
non ista magnificatis?Id unū oro parūper aduerti  
te:id unū mētis acie parūper inspicite:id unū inq  
testāte cōscientia uestra parūper attēdite. Quot ui  
ctorias/quot trophea/quot ex hostibus spolia re  
tulisti/quot in hoc tā diutino bello fœlices euētus  
experti estis/ex quo tā insolitū/tāq; uobis pestiferū  
consiliū excogitastis : Vt nequaq; uerendū esse ar  
bitraremini ī res sacras/ac deo dicata bona uestras  
extēdere manus. Quæ quidē uobis (mihi credite)  
in his tātis periculis/ac necessitatibus uestris/nullū  
subsidiū/nullūq; prorsus allatura sunt adiumētū.  
Et si aliter multis forte uideatur:qn īmo ueluti pe

stis quædā sæuissima: quæ mortifera cōtagione sua  
uicina ac proxima quæq; inficere et maculare cō/  
sueuit: ita hæc quoq; uestris apparatus et copias  
( quod pius deus auertat) ad interitū pernitiemq;  
deducent. Non tale pfecto consiliū inisset Cæsar  
ille; licet esset a uera religione semotus: qui ut in  
eius uita pulcherrime scribiſ: cū in aruerniā forte  
contēdisset: Aruerni uero tāq; raptū a summo im  
peratore spolium suspensum in templo gladiū Cæ  
sar is cōmostrarent: eundē tunc locū ingressus gla  
dium ipsum conspicatus subridēs obmutuit. Cūq;  
amici eum detrahi inde iussissent id nequaq; fieri  
Cæsar permisit. Et optime ac religioſe quidē. Eū  
nāq; sicut et cætera quæq; tēplorū ornatui ac cul  
tui dedicataliā rē sacrā existimabat. Quā ob rē nei  
quaq; fas esse censebat talia amplius manibus mor  
taliū esse cōtingēda: et in alios usus humanos esse  
quandoq; trāſferēda. Nō sic quoq; maiores uestri  
prefecto fecissent nihil tale unq; excogitassent:  
Non tale consilium inissent prisci illi suinma pru  
dentia / summaq; sapientia prædicti: qui nullo īmi  
nente periculo / nullis aduersis / nulla demum nei  
cessitate adacti: tale sibi unquam subsidium ascī  
scere uoluerunt: et prudentissime quidem:

b.ii.

Precipua  
rei Pu. gu/  
bernacula  
Religio atq;  
iustitia .

Diodorus .

Aegiptiorū  
religio in sa  
cerdotes ,

Intelligebant enim cuiusq; rei pub. optima guber  
nacula: quibus conseruatur augetur et propagat  
imperiū: duo præcipua esse religionē scilicet atq;  
iustitiam: quibus quidem stantibus et imperiū sta  
re necesse est: et pariter cū labētibus labi. Huiuscē  
modi itaq; artibus/ et institutis magis q̄ armis im  
perium hoc/ quod terra mariq; latissimū est: facile  
parauerunt. Vbi uero hæ artes et optimæ discipli  
næ labi ac declinare cœperunt: illico imperiū quo /  
q; ipsum magis ac magis minui/ ac retro fluere cœ  
pit. Quæ quidem omnia ad religionem sacrarūq;  
rerum diligentiorem cultū et obseruantiam (si recl  
te inspicere uolueritis) uos non mediocriter admo  
nere ac impellere debent. Neq; uero solum exempla  
hæc uestratia rerum male gestarum optimo do  
cumento uobis esse possunt: Verum etiam maxi  
ma illa antiquorum cura/ summaq; diligentia / et  
obseruantia: quæ diuinis rebus earumq; cultorib⁹  
cumulatissime semper est habita . Apud ægyptios  
namq; auctore Diodoro cū uectigalia omnia tres  
in partes æquissime diuidentur: primā sibi partē  
sacerdotes uendicabant: tantaq; apud eos auctori  
tate erant: ut eorū consilio et auspicio cuncta gere  
rentur: imunesq; et ab omni prorsus onere liberi  
secundum post reges dignitatis locum obtinerent .

Indi uero cum uniuersum populū in septēm tribō  
diuiderent : primā sacerdotū tribū constituebant :  
quā qdē ab omni opere et onere liberā sūmo cul  
tu summoq; honore dignabantur . Sed æthiopes  
sententia mea deorū cultu / et obseruantia omnes  
antecelluisse omnesq; facile superasse uidentur .  
Apud eos .n. sacerdotes i tēplorumq; cultores tan  
to in honore fuerunt: ut ex ipsis solū regum sume  
retur electio . Quodq; icredibile dictu uidetur tā  
ta fuerunt auctoritate / tantaq; illis fides adhibeba  
tur : ut cum sibi uideretur regibus nunciarent : ut  
mortē appeterent / ita .n. dicebant deorum suorū  
iubere responsa : Quam ob causam omnes reges  
usq; ad Ptholomei secundi tēpora / ipsis sacerdoti  
bus non ui neq; armis coacti : sed ex ueteri quadā  
consuetudine ipsa uicti superstitione sponte paru  
isse / et mortē oppetiisse traduntur. Quā ob rem  
hunc suæ tantæ pietatis in deos gloriantur fructū/  
mercedemq; tulisse:q; nihil illis hostilis īcursus: ni  
hil unq; inimicorū illis crudelitas obfuit. q; nunq;  
sub externarū gentiū sunt potestate redacti. Nam  
Cambises Persarum rex potentissimus: cum infe  
stissimo bello eos semel aggressus fuisset : maxima  
suorū strage accepta totum pene exercitū turpiter  
amisit. Hercules ac Dionisius toto orbe peragrato

Indorum  
religio in sa  
cerdotes.

Ethiopū reli  
gio in sacer  
dotes omni  
um maxia .

Ptholome  
us secūdus

Cambises.

Hercules.  
Dionisyus.

b.iii

Genes  
liber.  
Ingens  
fames.

Ioseph patr  
archa,

Ethiopēs pp eorum summā religionem ītactos re  
liquisse feruntur . In sacris quoq; codicib; nostris  
idem ferme traditur . In libro namq; Geneseos le  
gimus: superioribus sēculis tam uastam tamq; iau  
ditā famē uniuersum orbē inuasisse : Vt nusq; pe  
ne frumenta seu cibaria alia inueniren<sup>f</sup>: quibus in  
digentium posset inopiæ subueniri . Ea itaq; fa  
mis rabies : ægypti maxime regionem uehementer  
oppreſſerat: et in ea crudelius ac dirius crassabatur:  
**Adeo ut eiusdem regionis incolæ prædia sua** pos  
ſſiones recta / omnemq; ſuppellectilē pro emen  
dis alimentis diſtrahere cogerentur. Quæ cum ob  
famis diuturnitatē atq; ſxuītiā: eos quoq; defecif  
ſent: poſtremo ne ob ciborum inopiam misero cru  
ciatū et inaudito mortis genere uita excedere cō  
pellerentur : ſe ipſos quoq; potestati regiæ addixe  
re. Quam ob rem Ioseph ille sanctissimus regis p  
fectus cum iam immensam annonæ ad hoc ipsum  
copiam ante præparasset omnē terrā ægypti ſacer  
dotali dūtaxat excepta cūctosq; populos ſub pote  
ſtate rededit Pharaonis. Ex quo quidē tempore uſ  
q; ad Moiſem ſacro id attestante elloquio quinta  
pars omniū fructuū in tota ægypti regione regib;  
ſoluebatur. Quæ autē ad ſacerdotes téplorūq; cul  
tores ptinebāt: ea p̄ſuis ab hac lege imunia p̄ſan

Q. Falc  
ne facias  
obligatus  
per discepta

Romani in  
sacerdotes  
quales.

Valerius Ma  
ximus.

seruit. Non solū n. ingētia illis p̄dia cōtulerat Pha  
rao: Verum ēt ex publicis horreis toto famis tēpo  
re statuta illis cibaria p̄buit. Qua pp nequaq̄ sicut  
ti cæteri omnes possessiones suas ac utensilia reli  
qua uendere cōpulsi sunt. Quid Romanos cōme  
morē? Non ne apud illos amplissima sacerdotia sa  
crorū ministris constituta erant? Non ne summū  
illis studiū summaq; semp uigilantia fuit non ser  
uandæ solū tierum ēt ap̄lificandæ religionis? Om  
nia nāq; ut placet Valerio. Max. post religionē po  
nenda illa ciuitas duxit: adeo ut ipsis sacris summi  
quoq; magistratus seruire non dubitarent. Ita de  
mū se humanarū rerum imperiū ac principatū as  
sequuturos existimabant: si diuinæ potentiaz religi  
ose fuissent famulati. Verum qd nunc ista ulteri  
us psequar: cum oīa non solū sacrarū litterarū ue  
rum ēt barbarorū uolumina istiusmodi monimen  
tis et exēplis plena sint atq; ex omni parte referta?  
Itaq; uos ea legite: ea p̄currite diligenter: neq; sicut  
ti aiunt qdā sacerdotes deiq; ministros iueterū exē  
plo inopes et mēdicos ēē debere cēsebitis. Sed cōtra  
facilius iuēietis nullū ūq; tēp: nullāq; x̄tatē extitis  
se: i q̄ sacerdotes tā illiberaliter et idigne habiti fue  
rint. At q̄ si prisci tā diligētes tāq; religiosi i errore  
fuerūt: quales i summi ueriq; dei cultu futuros fuis

b. iiiii

se arbitrandū est ? Quales et nos quoq; esse debe-  
mus: qui non falsa idola / non demonia colimus / ut  
illi: sed maximū illum cæli terræq; ac cunctorū opi-  
ficem ? Quā ob rem uelle pfecto serenissime prin-  
ceps pro meo in te ac uestrā rem Pu.studio / ut et  
animus tuus / et eorum qui in ea opinione uersan-  
tur / aliquando ad salubriora consilia capienda er-  
ga templa tēplorumq; cultores / et illis dicata bona  
resipiscerent : et si non maiorū exemplo : At saltē  
recentibus malis uestris / et rebus infœliciter gestis  
ad id plurimū excitari debetis . Vercor.n.ego nō  
parum ac pertimesco : ne si diutius uobis ea mens  
idemq; propositū insederit: pati ēt acerbiora cogai-  
mini cum melioris sententiæ uiri nonnulli ea uo-  
bis pmittant. Sic .n. et cōpluribus aliis infœliciter  
accidisse memoriæ proditū est . Refert siquidē di-  
uus Augustinus in eo quē de ciuitate dei edidit li-  
bro . Cum Rome pestilentia quādam grauissima  
mulierū simul ac pecoris exorta fuisset : adeo ut p-  
morientiū multitudine iam defecturum genus ani-  
maliū crederetur. Hiems isuper illa tam incredibi-  
lis frigoris imāitate sœuiret: ut horredæ altitudinis  
niues p dies quadragīta pter solitū in foro duraue-  
rint: et Tiberis plurima glacie cōstringere: tum fe-  
runt fuisse responsum: q; ea esset pestilentia causa

. S . Augu-  
stinius .

Pestilentia  
ex retentiōe  
bonorū ec-  
diasticorū .

q̄a plurimas ædes sacras multī priuati occūpatas te  
nerent . Quibus postmodū restitutis: tum demū  
tot clades tot pdigia cessauere . Quintus ēt Fului  
us flaccus auctore Valerio memorabile ob contēp  
tam religionē exemplū posteris dereliquit . Hic . n .  
q̄uis censor: nequaq̄ tamē tulit ipune: q̄ i eo i p̄o  
magistratu tegulas marmoreas ex Iunonis Locriæ  
tēplo in eam quā Romæ extruxerat ædē fortunæ i  
pie transtulisset . Nam post hoc factū haud imeri  
to aduersa est mentis ualitudine captus: neq; dein/  
ceps ferunt rationis usum habuisse : sed p̄ summā  
animi egritudinē eum paulatim cōtabuisse ac mi  
serime expirasse memoriæ traditū est: cum ex duo  
bus filiis in illirico militantib; alterū audisset ei uia  
migrasse: alterum uero crudeli morbo affectum  
grauissime torqueri . Quo quidem casu Senatus  
Populusq; Romanus non mediocriter commotus  
publico decreto censuit: easdem tegulas fore locris  
deferendas : ut eo pacto et impium censoris opus  
emendaretur: et præclarum posteris exemplū præ  
beretur : immortali deo semel dicata haud uniq;  
esse absq; nefario scelere submouenda : aut in ali  
os etiam honestos et optimos usus transferenda :  
Si qui uero religione posthabita id impie presum  
posſent non sine graui stomacho Senatus se id pa

• Q. Fului  
us flaccus  
obcecatus  
p̄p direptio  
nē sacrorū

Agesilai reli  
gio magna  
in templis .

Mitridates a  
Lucullo ob  
templum Di  
anæ expolia  
tū pfligatus  
Ciziceni .

fraturos cognoscerent: meritasq; pœnas se quando  
que daturos. Cōtra uero de Agesilao clarissimo i  
peratore ab Xenophōte philosopho egregie lucu  
le interq; describitur: q; ipse semper templa quæ ēt  
erant inter hostes summo studio sūmaq; diligētia  
uenerabatur: existimans īmortalē deū nō inter ami  
cos solū sed ēt inter hostes pia religione colendū.  
Pariq; modo dei supplices atq; cultores ēt iniini  
cos nullo penitus pacto uexari patiebaſ . Absurdū  
quippe ac īmanissimū scelus esse dicebat: ut quicq;  
ex tēplis delubrisq; diuinis unq; demeretur: aut eo  
rum sacerdotes damno seu aliquo afficerentur in  
cōmodo . Qua pp capitali admodū odio tales im  
pios talesq; sacrilegos semp insectabaſ . Hoc nā  
q; pacto et hostes debellare et exercitū suū strenue  
deducere posse sperabat . Qd' qdem ita ēē ex eo  
facile satis coniici potest: qd' de Mitridate in uita  
Luculli a Leonardo Iustiniano nobili cōpatritio  
uestro e græco in latinū traducta p̄clare describiſ.  
Dū. n. hic pedestrib; naualibusq; copiis urbē Cizi  
cenorū Populo Ro. confederatā ingenti manu es  
set aggressus: oborta illico tēpestate deficientibus  
q; cibariis a Lucullo turpiter pfligatus est: maxia  
exercitus sui parte in ea pugna trucidata atq; con  
sumpta . Mitridates uero dum saluti sua sola fuga

consulere nititur: tam ualida iterū tēpestāte ob rū i  
tris est: ut relicta nauī quæ ob pcellæ magnitudinē  
iam iam naufragiū subitura uidebaſ se se necessi  
tate coactus pirratis cōmitteret . Eam uero tantā  
cladē tantamq; calamitatē ferunt non īmerito illi  
intullisse Dianā: quā ueluti deā et aliqd ī se numi  
nis habere arbitrabanſ: quia uidelicet īpiis manib;  
maxima cū religionis iniuria atq; dedecore eius te  
plū expoliare : eiusq; simulacrū inde detrahere p/  
sumpsisset. Non minus sane horrendū in Roma/  
norū exercitu ob similē causam aliud cōtigisse me  
moraſ . Nam cū Carthago illa Romanis inimicis  
sima ui tandē ab eis esset oppressa: Romanus mi  
les quidā contēpta religione in ea ipsa urbī direp  
tione sacrilegiū perpetrare non timuit . Appolli  
nis .n. statuā qui ueluti deus ab omnibus colebaſ/  
aurea ueste nudauit. Sed nefarii sceleris debita sup  
plicia diutius non effugit . Nam sapienti iustoq;  
cōſilio egit æquislimus deus : ut sacrilegæ manus  
inter fragmenta uestis inuenirentur abſcissæ: quo  
doctiores in posterū cæteri redderentur : q̄ maxi  
me a rebus sacris atq; diuinis abstinentiū esset . Ex sa  
cris quoq; libris istiusmodi exēpla q̄ plurima affer  
re possumus: p̄cipue uero ut i Machabeorū libris  
contineſ pulcrū nobis ac p̄clarum p̄stat exēplum

Carthago .

Militiscuius  
dam. Ro. ma  
nus ob sacri  
legium inuē  
te abſcissæ.

Anthiocus  
rex ob con-  
temptam re-  
ligionem a  
deo pcussus

Anthiochus rex ille scelestus : qui tanta superbia /  
tantaq; arrogantia se supra humanū modum extu-  
lerat: ut sibi ēt uideretur fluctib; maris posse impi-  
tare: et ipsa cæli astra cōtingere. Hic itaq; cōtemp-  
ta ueri et æterni dei sacra religione / maximū illud  
ac celeberrimū iudeorum téplum sacrilegis nefan-  
disq; manibus expoliare non timuit . At qui diui-  
nam ultionē: quā se facile effugere posse sperabat  
diutius non euasit . Subito namq; tam dura tāq;  
horribili pcussus est plaga: ut de ipiissimi corpore  
uermes scaturirent: et horrendo admodū cruciatu-  
uiuentes eius carnes effluerent . Hac igit tam ma-  
nifesta tamq; diuina ultione cōmonitus ad sui tan-  
dē cognitionē deductus ē . Postremo uero cum su-  
um ipsemet fetorē ac cruciatū ferre non possit: iu-  
stū est inquit subditū esse deo : et mortale non pa-  
ria deo sentire. Templū insuper cuius paulo ante  
ornamēta ac p̄ciosissima uasa impie abstulerat se  
multis optimisq; munerib; ornaturū ēē pmisit: ip-  
sosq; sūptus ad sacrificia ptinētes de redditib; su-  
is se cumulate ipensurū: et se insup iudeū facturū  
esse spopondit. At cū ob īmania scelera maximaq;  
sacrilegia sua misericordiā cōseq idignus existeret  
scelestē uitā digna morte finiuit. Ast heliodoro re-  
gis legato ut ī eodē libro legit simili cā eadē prope

Anthiochi  
mors.  
Heliodo-  
rus ,

contigere . Is namq; a rege ad diripiendā tēpli  
pecuniam missus: dum iniunctum sibi negotium  
strenue perficere nititur: quicūq; eius sacrilego im  
perio parere ausi fuerunt: extemplo diuina quadā  
uirtute ruentes in dissolutionē formidinemq; con  
uersi sunt. Heliodorus aut e cælo quodam sibi nu  
mine apparente subito in terram deiectus uariis ē  
confectus uulneribus: Quam ob rem omni salutis  
spe destitutus ex eo ipso loco quē paulo ante sum  
ma superbia summaq; iactantia īgressus fuerat ma  
xima satellitū stipante caterua a paucis postmodū  
semianimis extractus est : Sed paulo post reddita  
sibi sacerdotum orationibus pristina insperataq; sa  
lute: cum multa uouisset īfecto negocio ad regem  
cum exercitu remeauit: Vbi cum ea quæ sibi appa  
ruissent e cælo / et quæ ī se ipso expertus fuisset ope  
magni dei ubiq; priuatim ac publice testaretur /  
a rege interrogatus est: quis nam hac de causa Hie  
rosolimā iterū mitti sibi aptus uideretur . Si quē  
inquit habes hostem aut regni tui insidiatorem il  
luc eum transmittito . Eum enim si tamen uiuus  
euaserit flagellatum recipies: q; in eo ipso loco ue  
re sit quædā uirtus cælestis atq; diuina. Nam maxi  
mus ille cæli terræq; creator: q; sūmo consilio sum  
maq; sapientia omia regit moderat atq; gubernat

Helicdonus  
a deo p̄cuf /  
sus .

Heliodori  
uera professio

Expertō cre-  
dendū tibi,

Qualiter  
habeātur sa-  
cerdotes ho-  
rū temporū

eiusdem loci custos / acerrimusq; defensor existit.  
Quicūq; igitur spreta religione uim aliquam eidē  
intulerint impias ue in eum manus iniecerint ; ne  
quaq; sibi potent impune futurum. Tales et. n. eo  
usq; insequitur: uariisq; calamitatibus et cruciati-  
bus afficit; quoad perpetrati facinoris luant meri-  
tas pœnas atq; supplicia: huius uero rei ego ipe op-  
tinus testis existo: qui hac de re paulo ante in me  
metipso periculū feci. Vereor profecto Serenissi-  
me princeps: ne quod Heliodoro accidisse diximus:  
id quoq; qui sacratū rerum tributa exigunt aliquā  
do ifœliciter eueniat: tū quidē quia id agūt: a quo  
si recte saperent procul dubio abstinerēt : tū uero  
maxime quia id ipsum a plerisq; summa imodestia:  
nullaq; religionis aut inopix habita ratione agit,  
quod tamen ab illius uestri incliti sapientissimiq;  
senatus uoluntate lōge arbitror abesse. Ut scilicet  
in huiuscemodi exactionibus sacerdotes / deiq; mi-  
nistri: qui perpetuo studio cultui diuino p omniū  
salute uacant/ aliquā prorsus iniuriam patiantur.  
Verū id priuatorū cōfiliis fieri magis ascripserim:  
q; hoc quidē pacto hocq; in honesto ministerio il-  
lustrissimo Senatui uestro gratificari cupiūt. Qua-  
pp se in exigendo austeros rigidos et inhumanos  
p̄stare conantur. Nisi. n. ad diē prefixū pecunia p̄

sto sint: adsunt saeui exactorū ministri: i miseris sa  
cerdotes ipetū faciūt: cōuiciis lacerant/ obprobriis  
onerāt: cōtumeliis uariisq; caluniis sauciant: Eorū  
substatiā ac suppelectilē asportāt/ diripiūt: auctōni  
bus uendūt: plus fere i p̄dā q̄ in solutōnis sortē ce  
dit. Heu omībus retro seculis inaudita ipietas. O  
sūma crudelitas omni supplicio uidecāda. Hæc ne  
xpiano nōi conuenire censenda sunt? Existimare  
debemus deū tāta facinora cōtēnere posse? Cætera  
qdē peccata et si grauia: ueniā tamē aliquādo plai  
cato deo cōtritione meren̄t: Sed ubi rebus sacris ui  
olētas manus inieceris: tū deniq; deum iratū expa  
ueas. Adest. n. subito uidec ipietatis: ac debitas pœ  
nas illico districto et horrēdo iudicio reposcit. Nūc  
uero ad huius rei maiore i certioremc scientiam fa  
ris cōmode referri posset infelicissima. Cn. Pom  
pei clades atq; iactura: cui primo tantum fauit at/  
q; arrisit secunda fortuna: ut iuxta Ciceronis sentē  
tiam nemo unquā tam imprudens arbitrandus sit  
aut fuerit: qui a deo imortali tot ac tantas res taci  
tus auderet optare: quot et quantas ad. Cn. Pom/  
peium plenissime deus ipse cōtulerit. Verum tamē  
quia secundum Liuium patauinum ac Iosephum  
totius hebraicæ historiæ scriptorem luculentissi  
m̄ templi Hierosolimitani facultates ac dona

Ingens im  
pietas.

Cn. Pom  
peius.

Cicero.

Liuus.  
Iosephus.

Popeii exi /  
tus ob tem  
plū Hiero  
solimis ex  
poliatum .

M. Crassus

M. Crassus  
ob tépli Hie  
rosolimitāi  
direptiōem  
ppria ma  
nu ɔfossus .

profana impietate diripere conatus est; miserandū sibi postea exitum comparauit. Quā enim tristi ac infœlici pugna in Thesalia aliisq; locis cum Julio Cæsare decertauerit: nec non q̄ miserabiliter a puero Ptolomeo in quo maximam ac præcipuā spē collocauerat occisus atq; truncatus fuerit satis exploratū habemus. Paria ac ut sic dixerim sororia istis etiam. M. Crasso contra Parthos Romanis in festos bellum gerenti euenere . Is enim ad bellum proficiscens cū illud idem iudeorum templum diripiuerisset: atq; sicuti Iosepho placet inter cætera auream trabem templi centum et quinquaginta miñnarum auri confregisset: et i militum sumptus impie conuertisset: adeo ifœlici postmodum et infaustissimo bello cuntra ipsos Parthos decertauit : ut iter maximas ac grauissimas Romanorū clades ac iacturas non immerito connumeretur . Primo. n. filius optimæ indolis ante cari parentis oculos Parthicis telis extinctus est . Plurimæ deinde pulcherimæ legiones totius Romanæ militiae decus miserabili sunt strage confectæ . Multa preterea eorū signa hostilibus manibus intercepta : reliquus ueiro exercitus qui tantæ cædis superstes extitit quo quemcunq; rapuit fuga in Armeniā Ciliciam Siriamq; distractus est . Postremo Crassus ipse sat q;

dem iusto optimi dei iudicio ab hostibus captus  
crudeles sibi magis delegit manus inicere: q̄ uiuus  
barbarorū manibus turpiter abduci: Nam uirgā  
quandam qua equum urgebat in oculū suum ip̄e  
met altius ip̄essit: Sicq; confossus duro mortis ge-  
nere impiam animam efflauit. Cum uero perditū  
eius caput una cum dextera manu a barbaris esset  
abscisum: et ad regem Aristonicum deportatum:  
summo hostibus ludibrio fuit: et uti uiro de rebus  
sacris pessime merito aurū liquidū in os eius iustis  
sime infusum est: Ut cuius animus nefaria sacri au-  
ri exarserat cupiditate: etiam eius mortuum et exā-  
gue corpus auro ipso adureretur. Talia sunt igit̄  
munera: talia premia / talisq; mercedis retributio  
eorum qui res sacras diuino cultui dedicatas dirri-  
pere sibiq; uendicare: aut in alias eas usus distrahe-  
re presumūt. Verum sicut istis ob contemptam re/  
ligiouē graues ultiones legimus īflictas: ita quoq;  
piis cultoribus ingentia p̄imia fœlicesq; rerum sac/  
cessus æquissimo dei iudicio fuisse concessos. De  
Alexandro quippe Macedone inuictissimo rege  
memoriæ proditū est: eum erga res sacras cerimo-  
niasq; diuinās liberalissimū semper ac munificen-  
tissimum extitisse. Cū enim adhuc admodū iuue-  
mis esset ætate inter sacrificandū utraq; manu thui-

Crassi mor-  
tui in os ob-  
maiorem uin-  
dictam aurū  
liquidū fusū

Alexander i  
res sacras li-  
beralissimus

c.i.

**Leonidæ in  
Alexandrū  
redargutio.**

Alexandri  
pulchra re  
 sponsio .  
Aureaucrba

Alexádri in  
sacerdoté ia  
dum iugens  
humilitas .

ra ac preciosa odoramenta pro ipsis sacrificiis diuinis exciperet: tum Leonidas inquit. O Alexander cum terris ferentibus aromata imperitabis: hoc pacto tam large tamq; effuse euaporare poteris . At impreseñiarū consulte rebus utere partius . Tum Alexander. O Leonida id a te potissimū expeto: Ut si secunda peroptas: cum sacris numinibus parcus esse desistas . De eo quoq; in Iosepho legitur: sicut et in aliis quoq; veteribus historiarum monumentis passim traditur / multa ac insignia sacratissimo illi iudeorum templo eum munera cōtulisse: et maximo deo nostro / propriis manibus immolas se. Tanto insuper honore / tantaq; reverentia Iadum summum illius templi sacerdotem prosequutus est : Ut etiam humi stratus eum adorarit . Ius sit deniq; ut iidem sacerdotes / templiq; ministri : quicquid uellent libere poscerēt . Inter cetera itaq; ingentia dona: hoc quoq; illis contulit: ut genti illi perpetuo patriis liceret legibus uti : nec non ut per septem annos / uniuersa iudeorū gens ab omni prorsus tributorum onere libera esset / et immunitis. Postremo uero statuit: ut quisquis ex hæbreorum gente secū militare decreuisset: summa humanitate / summoq; ab omnibus honore coleretur . His itaq; omnibus hoc modo pactis: quasi diuina

uitute cōmunitus / magno tunc animo aduersus  
Indos strenue mouit exercitū / summaq; et incredi-  
bili celeritate Porrū illum potentissimū / ac pene i-  
superabilem indorū regem insigni uictoria supera-  
uit. Non possum profecto hoc loco insignē illum  
Themistoclē non summis attollere laudibus : quē  
inter cæteras eius illustres / maximasq; uirtutes / q;  
bus egregie præstítit hac precipue religionis / diui-  
narumq; rerum obseruantia cæteros ætatis suæ ui-  
ros antecelluisse constat . De eo quippe memorix  
proditum est : q; cum a publicis rebus gerendis ua-  
cius esset si quid sibi ocii daretur : illud plerunq;  
ad splendidos sacrarū ædium apparatus / et deorū  
tēplis affixa donaria / curiose et accurate uisenda  
cōferre solebat . Quare omni diligentia / omniq;  
cura inspectabat : ne quid unq; quis demoliretur :  
ne qd usq; deesset : qd ad deorū religionē / et cultū  
optime nouerat p̄tinere . Quā ob rem si ii de q;  
bus nunc diximus tam̄ deuoti / tamq; religiosi sup-  
stitiose diis falsis obsequendo fuerunt : qto magis  
nos Christiani id agere debemus : qui ueri et æter-  
ni dei cognitionem tenemus ? Qua inq; cura / qua  
diligentia / quo studio / quo conatu / qua pietate /  
et obseruantia excolenda nobis est uera et indu-  
bitata religio ? Qua uerus ille cæli terræque

c.ii.

Alexander  
pp sacerdo-  
tes bene habi-  
tos / Porrū  
Indoru: re-  
gem uicit .  
Themisto-  
cles omnium  
ætatis suæ re-  
ligiosissimus

creatori et rector colitur et adoratur: Qui non so  
lum nobis cuncta hæc terrena / ac temporalia bo  
na / fœlicesq; rerum euentus sine cuiusq; adminicu  
lo iugiter prestat: Verum etiā animis ipsis / cum e  
corporum custodia excesserint beatam immortalit  
atem / ac æternam tribuit fœlicitatē si tamen uitā  
hanc recte laudabiliterq; duxerimus: quæ quidem  
dii illi gentilium non solum cultoribus suis presta  
re non poterant: Verum etiā in nullo prorsus abs  
que dei nutu illis pdesse aut obesse ualebant. Si  
qua uero cōmoda / aut etiam detrimenta eos ali  
quando hominibus legimus intulisse id solius deit  
et eo quidem equiori quo secretiore euenisse per  
missione firmiter sentiendū est. Neq; enim quic  
q; in hoc mundo fieri aliquando potest absq; eius  
imperio: qui solus est omnium rerum fons/origo /  
primumq; principiū: qui solus hunc mundum re/  
git / moderatur / et mouet. Quo circa longe qui  
dem maiori studio propensioriç; diligentia nobis  
enitendum est: si deum ipsum bonorū omnium  
lavitorem optamus habere propicium: ut religio  
nis / ac diuini cultus integritas accuratius obserue  
tur: ne quid impium erga templa / ac deo dicata  
bona / ne quid a nobis erga sacerdotes / deiq; mi/  
nistros peragatur indignum. In quod quidē im /

Qualis esse  
debet qui deū  
mult habere  
propicium.

pietatis genus si quando prolabimur certo nouerimus eadem nobis infligenda esse supplicia: quæ falsos illos deos: immo uerū deum per ipsos contēptōribus suis intulisse antea diximus: et eo quidē atrocius et grauius; quo maior est / ac scelestior offendit ueri summiq; dei q̄ demonū falsorumq; deorū.  
Quam ob rem animaduertite nunc quæso Clarissimi Veneti . Animaduertite inq; a quo / claraq; rationis intuitu : q̄ prospere ac secunde / deum ac ipsa dicata bona uenerantibus omnia successere :  
Quam etiam infœliciter / contēnentibus / uel im pie profanantibus: necq; mirū uobis profecto uis debitur: si parum prospere uobis res uestræ succedunt; si qua incōmoda / ac pericula: si quam cladē / ac calamitatē: si quam iacturā et pressuram sustineris . Non .n. eiusmodi sunt hæ uestræ diuinarū rerum exactiones: quæ uobis dei omnipotentis auxilium implorent . Non quæ imminentē vindictā et ultionē auertant . Non tales proculdubio sunt quæ uobis uictoriā ac fœlicem euētum belli promittere queant . Longe profecto uos uestra fallit opinio : Si sic opinamini : si sic uobis persuadetis uestro ( mihi credite ) uos inq; uestro mucrone cōficitis . Necq; enim hæ uobis ut antea diximus / ali quod afferunt adiumentum sed magis perinde ac

c. iii.

Trogus Pō  
peius.

Brenus dux  
Gallorum.

Brenus ad di  
ripiendum  
apollinis tē  
plū propans  
Dei iudicio  
vulneribus  
multis affec  
tus se ipsum  
interficit stra  
to prius exer  
citu.

Pyrrhus sa /  
cros r̄csau  
ros asportās  
nauffagium  
passus eos re  
stituit,

letale uenenum plurima detrimenta / maximasq;  
iacturas . Non hæ deniq; diuinā iram demulcent:  
sed p̄uocant magis i et assiduis clamoribus expo /  
scunt. Legimus sane aliquādo apud Trogū Pōpe  
ium: uirū eloquētissimū summaq; auctoritate cō  
spicuū: Regē quēdam gallorū noīe Brenū cū Ma  
cedones bello deuicisset / quasi terrena īā sibi spolia  
sordescerēt animū ad deorū tēpla spoliāda cōuer  
tisse / scurriliter quidē iocatū Locupletes deos ho /  
minib; largiri opportere. Cum igitur delphos ad  
Apollinis tēplū dirripiēdū p̄perasset: ubi maxima  
uis erat auri / atq; argenti: subito exorto terremotu  
montis non modica pars abrupta ē: quæ uniuersū  
fere gallorū stravit exercitū. Dux uero Brenus cū  
vulneribus plurimis affectus et ipse fuisset / atroci  
tateq; doloris amplius tollerare nō posset : se i p̄m  
p̄prio pugione peremit: Sicq; ob ausum scelus dei  
bita supplicia / digna morte p̄soluit. Pyrrhus uero  
cū Locrēses ex thesauro dæ Proserpinæ / magnā si  
bi pecuniā dare coegisset: Cūq; hac nefaria preda  
onustus enauigaret : ui subitæ tēpestatis tota cum  
classe i uicinis dæ littoribus totus illis us est: in qui  
bus deinde reperta pecunia denuo / thesauri custo  
dix restituta est . Verum quid ista longius prose  
i quor? Vereor enim si cuncta antiquorum exēpiat

huic proposito nostro accōmodata / præsentī ser-  
mone cōplicti uoluero / me scribendi modum ex-  
cessurū: tot namq; sunt: ut pre eorum multitudine  
uix enumerari queant. Omitto itaq; illud. Q. Cx  
pionis exemplum qui consul cūm tholosanū oppi-  
dum diripuisset: multumq; auri / et argenti in eius  
oppidi templis compertum fuisse: quisquis in ea  
dirreptōne aurum cōtingere presumpsi / horribili  
statim dolore / ac cruciatu e uita migrando perpe-  
trati sacrilegii pœnas meritas dedit. Omitto Xersē  
Persarū Regē: qui quatuor armatorū milia misit  
Delphos ad Apollinis templum diripiēdum / atq;  
uastandum. Quæ quidem multitudo imbris to-  
ta atq; fulminibus deleta est / penitusq; consump-  
ta: Ut uel sic intelligeret Xerses / quanto maior  
esset deorum iniuria: tanto nullas aduersus de-  
os esse hominum uires / atque conatus. Quæ sa-  
ne uīdicta / iis quoque temporibus satis accommo-  
dari posse uidetur. Itidem namque uobis fere sæ-  
pius euenisce conspicimus: ex quo ecclesiarum bo-  
na tollere et in stipendia ea militum errogare cœ-  
pistis. Non solum enim / ut uos metipsi quoque  
optimi testes esse potestis / onerariæ naues in/  
genii bellico apparatu / multis uariisque bellicis

.Q. Cepio.

Vindicta in  
gens in sacri  
legos.  
Xerxes.

Quatuor mi-  
lia ad spolian-  
dum Apolli-  
nis templum  
missa fulmi-  
nibus deleta  
sunt.

c. iii.

ornamentis onustæ: demissis e cælo fulminibus ua  
riis tempestatibus i uariisq; periculis: miserabile p  
tulere naufragium. Verum èt multa hominū mi  
lia/ multis incòmodis / ac calamitatib; oppressa in  
fæliciter corruerunt: adeo ut nulli uel pauci admo  
dum: quos ad hoc bellum contigit proficisci salui/  
icolumesq; redierint. Vnde quæso Clarissimi Ve  
neti hæ tantæ clades? Hæ tantæ hominum cedes?  
Vnde tot incommoda/et aduersa? Nisi propterea  
q; non aduersus homines tantum: Sed aduersus  
deum / eiusq; cultum geritur hoc bellum? Sed de  
hoc satis. Nunc enim ad hxc tempora nostra con  
uertenda est orario: et domesticis exemplis claudē  
da. Non solum enim antiquorum nobis exem/  
pla sufficere debent: si et nostra quoq; commode  
afferre ualeamus: Presertim cum multos dicturos  
non dubitem. Cur nobis gentilium / totq; scæle/  
stissimorum deorum exempla proponis? Cur inq;  
nobis eorum q; a uera erant diuinitate semoti / ul/  
tiones adducis? Quibus cōmode satis et opportu  
ne respōdendū est: a me id circa istiusmodi deorū  
exēpla cōmemorata fuisse: Ut facilius inde/planū  
usq; perciperemus: q; acerrimus sui ipsius uindex  
esse debeat noster imo omniū deus in eos: qui cul  
tui suo dedicata bona ipie dirripere / et in alios ea

Qualis deus  
noster i sacri  
legos erit: cū  
ii q; non sunt  
dii tales fue  
rint.

usus trāsserre presumunt. Ex quo iī q̄ falso dii uoc  
citabātur et erant: q̄ q̄ omni p̄s us diuinitatis nu  
mine carebant / tam s̄tuas ultiones / tamq̄ p̄nitio  
s̄issimas clades / ob eorum spretā religionem / ac sa  
crarū rerum impiissimā direptionem . Tales inq̄  
dii / immo uero magis deus ipse p̄ eos traditur in /  
tulisse . Cur autē id fieri pmiserit aequissimus de  
us: ut hi qui demones magis erant q̄ dii / ab homi  
nibus tam graues / tamq̄ manifestas p̄cenas exige  
rent : ea potissimū ratio fuit: quia nimirūm quod  
erat in eis ueram religionē ueramq; diuinitatē con  
tēbant: quādo ea ipsa idola uariis sacrilegiis / et  
impietatibus aspernabār̄: quā licet falso : Verita  
mē dii uulgo credeban̄: et ab his maxime : q̄ faci  
nora talia p̄petrabant: et non nihil numinis p̄sefer  
re uidebātur. Quā ob rem diuinitas ipsa istiusmo  
di contēptus / et iniuriæ debita supplicia / haud im  
merito reposcebat . Cum nunc uero talis ignorā  
tiæ remota caligine / p̄ huiuscemodi scelera directi  
us cōtemnañ: grauiora quoq; / et acerbiora tormē  
ra suis cōtēptorib; ifliget. Sed nūc tandem ad nostri  
temporis hoīes unde digressi sumus reuertañ oratio.  
qd igit̄ cladis et infelicitatis ipiissimo Federico se  
cundo cōtigerit / ob ecclesiæ uiolatā libertatē / id ne  
quaq̄ opus est multis uerbis exprimere . Id. n: uni

Federicus se  
cundus .

Soldanus  
Aegypti prin  
ceps.

Federicisecū  
di ob sacrū  
direptionē  
exitus.  
Cararienses  
principes.

cuiq; historiarū perito satis est cognitum. Nā cum ab Innocentio pontifice tertio / ad imperii digni/ tate euectus esset: crucemq; pro expeditione cōtra Christianorū hostes assumpsisset: tum iſano atq; pestifero ad sui ruinam suscepto consilio / in ecclē ſiaſtīca / ac deo dicata bona conuersus: ea dirripere et in profanos uſus transferre non timuit. Hīc ita/ q; ad eam uſq; cecitatem / ac nefandā rabiem plap/ sus est: ut cum maximo Egypti principe / quē Sol/ danum uocitant / ad religionis / et ecclesiarū euersi/ onē / sacrilegas pactiones inierit: cōſenseritq; prſus a quibus religiosæ ac christianæ menti summopere esſet abhorrendū. Atqui debitas pœnas perpetrati ſceleris diutius non effugit. Nam post multarum urbium dirreptōnē / post multas atq; diuturnas cū Romana ecclesia diſſensiones: post innumerā ſa/ crarum rerum prædas / post multa deniq; ac īma/ nia sacrilegia proprium filium ſuspitione affectati imperii teterrimis carceribus adactū crudeliter diē ſuum obire coegit. Iþe deniq; grauibus ecclesiæ cē/ ſuris affectus execrabiliter uti par erat a Manfredo naturali filio ſuffocatus eſt. Non pretermittā hoc loco Carratiensium principum in ſimili impietate non diſſimilem calamitatem: nam cum rerum ſa/ crarum uſum / ob pestiferum ab eorum emulo ac/

Patauiū a ca  
rariensibus  
amissum ob  
rerū sacrarū  
usum sibi uē  
dicatum.

Judith.  
Olofernes,

Dauit.

Optimū con  
filiū prisco  
rū uenitorū.

ceptū cōsiliū sibi ipie uēdicassent: i peritū postea ac  
i pām celeberrimā urbē patauiū et natura / et ope  
munitissimā: quæ uix expugnari posse cēsebat / fa  
cillime amiserūt. Neq; n. mentitus ē ille q ait Nisi  
dominus custodierit ciuitatē frustra uigilat q cu /  
stodit eam: et nisi dominus exercitū iuuuerit: inua  
nū pfecto laborat : q illum prudētia sua deducere  
nitif. Sic illa quoq; sancta Iudith cum isolentissi  
mi caput Olofernī pprio eius mucrone detrucas  
set / egregie domino p̄cinebat . Non i multitudine  
est uirtus tua domine: neq; i equorū uirib; uolun  
tas tua: sed humiliū semp et mansuetorū tibi placu  
it deprecation. Quā ob rem si uos quoq; in maxi  
mo ac splendido nauiu apparatu spem uestrā loca  
ueritis: neq; bonis operibus ac sacrarū rerū diligen  
tiore cultu deum placare cōrenderitis: satis pfecto  
ptimescēdū est: ne irato eo frustra uobis belli uicto  
riā promiseritis : Cum iuxta illud insigne oraculū  
inuictissimi Dauit i domino magis cōfidendū sit  
atq; sperādū. Sic q ppe dicebat. Hi i curribus et hi i  
eqs: nos aut i noīe domini dei nostri uictores eris  
mus. sic pfecto maiores uestri hostes suos terra ma  
riq; strenue debellarūt. Sic crebras uictorias ac glo  
riosā retulere trophea: ceterū cōsiliū nūq; inire uo  
luerūt: ut res sacras/ ac religiosorū bōa cōtigerent

Philipus  
Maria,

Philipus  
Maria / et re  
gni maxima  
parte et sani  
tate corpora  
li / et posteri  
tate familię  
suę ob sacro  
rum direptio  
nē priuatus ,

aut bellicis ea usibus traderet . Percurrite uos isto  
rias uestras Annales et monumēta uersate : nunq  
illos iuenieris ex rebus sacris belli sibi parasse sub  
ſidia . Postremo uero ante oculos uobis Philippi  
Mariæ recens pponatis exemplū:q cum secundos  
admodū in rebus suis successus habuisset: et oīa si  
bi pene ex sentētia cōtigissent: Ad eā deinde iſani  
am / eamq dementiā animū inclinauit: Ut eccl  
esiastica bona sibi absq timore uēdicare psumeret.  
Sed ecce q pulchre debitas pœnas exsoluit : Non  
ſosū .n. multis / affiduisq bellis defatigatus ſperii  
ſui partē non modicā amisit: et inimicos ſuos pro  
pe niānia ppriviæ ciuitatis diſcurrentes audiuit. Ve  
rum ēt i corpore ſuo graues / acerbosq prulit mor  
bos: adeo ut lumē oculorū orbatus infœlicē admo  
dum longo tēpore egerit uitā. Quē uero exitū ha  
buerit eius imperiū: quo ue pacto illius illustris fa  
miliæ posteritas extincta ſit nullaq in eo relictā ſit  
dominiī ſuccessio unicuiq ob rei ipsius recentem  
memoriā ſatis potest eſſe perſpicuum . Quorsum  
igitur tam multa tam longo ac uario ſermone con  
ſcripta ? Quorsum tam innumera gentilium et  
paganorum pariter ac Christianorum exempla ?  
Hæc omnia nēpe Serenissime Princeps Vosq Clা  
riſſimi Veneti pro meo in ueſtrā rem Pu. studio /

et amore commemoratione / ac breuiter perstrinxisse  
uolui: tum quidem: ut eorum animus / qui in hac  
sacraru[m] rerum rapiendarum opinione uersantur:  
et priscorum exemplis / et rebus a se infeliciter get-  
atis ad saniora / melioraque consilia capienda rescipi-  
scat : Tum uero ut unusquisque optime intelligat:  
nullum unquam non solum nostroru[m]: Verum etiam  
antiquorum temporu[m] inuentum fuisse: qui deo di-  
catis rebus / impias quandoque manus admouerit:  
cui longo tempore res sux[em] prospero / felicique cursu  
successerint: aut is non statim meritas pœnas exsol-  
uerit . Quod utinam a uobis imperioque uestro a /  
uertat clemetissimus deus . Quas ob res ne in lon-  
gum nimis nostra protendatur oratio . Vereami /  
ni uereamini et uos Clarissimi Veneti si in hoc ue-  
stro proposito diutius persistiteritis: ne tot impendē-  
tibus malis ac periculis / grauiora etiam subire ac to-  
lerare cogamini . Non arbitremini id uobis magis  
quam ceteris impune futurum: Lento enim gradu ad  
sui vindictam diuina procedit ira: tarditatēque sup-  
plicii pœnae grauitate compensat.

Nunquam profecto a constantibus in re publica guber-  
nanda uiris laudata est in una sententia imota pmā  
sio: Sed ueluti in nauigando / si portum tenere nō  
queas tempestati obsequi artis est: Cum uero id mu-

Nullus unquam  
sacrilegus  
diu de sacrile-  
gio gaufus.

Optimū con  
siliū attendite  
Veneti.

tata uelificatione assequi ualeas: stultum profecto  
est: et insanū eum cum periculo cursum tenere:  
quem prius cœperat . Sic nempe et in administrā  
da re pū. gerendum est. Neq; enim idem semp cō  
siliū: eademq; sententia sequenda est. Sed quod  
honestum: quod utile: quod fœlicē rei pū. digno  
scitur afferre successum. Id certe sequendum: id  
amplectendum: et in eo diutius firmiter permanē  
dum . At uero si id rei pū. pernitosum esse discer  
nitur: fatuum profecto esse: ac temerarium unus  
quisq; sanæ mentis itelliget: id cum periculo seq:  
quod possis cum salute: ac gloria declinare . Nūc  
igitur clarissimi ueneti me salutis uestræ cupidissi  
mum exaudite . Vobis uestrisq; rebus melioribus  
consiliis succurrite. Venetorum nomen toto orbe  
celeberrimum: sanctōribus institutis custodite. Va  
rias uobis impendentes procellas: ac tēpestates: fa  
lubrioribus remediis amouete. Ut talibus cōsiliis:  
talibusq; sententiis: et rebus uestris: et uniuersæ p  
uideatis rei pū. Christianæ : Cuius salus e uestra  
dependet.

FINIS . . .

Questio disputata per .D. Celsum Veronensem  
Canonicū regularē cōgregationis lateranen. uide  
licet An aliqua res pu. possit conducere iudeos ad  
fēnerādū sine peccato | et ēt an Papa ualeat cōce  
dere q̄ id fieri possit sine peccato .

**A X I M A** Controuersia | atq̄ dubi  
tatio Paduæ fuit: An aliqua res pub. pos  
sit cōducere iudeos ad fēnerādū sine pec  
cato. Et an papa/uel uniuersalis ecclesia  
posset id concedere fieri sine peccato. Et quia ali  
qui theologorū | et canonistarū ausi sunt tēmēre  
affirmare q̄ sic supponētes et affirmātes q̄ iudei  
possunt fēnerari sine peccato: Ideo primo queren  
dū ē: An iudei possint exercere usuras sine pecca  
to. Primo dicendum q̄ falsum est q̄ iudeus possit  
exercere usuras prout usuræ sunt | et hoc sine pec  
cato: imo nullus omnino hoīum ēt paganorū gēti  
liū | et quorūcūq; rō ē qa usura ē cōtra legē naturæ  
quæ oēs hoīes obligat et semp obligauit et obligat  
bit. Nam contra legem naturæ non cadit dispensa  
tio: qa omne decēs ī ea īcludit: Vnde lex naturæ se  
cūdū qd magis obligat q̄ ius diuinū: Nā cōtra ius  
diuinū aliq̄do fcā ē dispēsatō ut patet d̄ pceptis ce  
rimonialibus/ut de sabbato et ce. Sed nō cōtra ius  
naturæ: qa eēt dispēsatio cōtra omnē decētiā cōtra

Ius nature  
quō magis  
obligat q̄ ius  
diuinum .

Richardus.

omnem ordinem naturalem / cōrra omne dictamē rationis / et contra omnem moralitatem. Vnde Richardus de media uilla in quarto .di. xvii. ar. ii. q. vii. dicit q̄ omne quod est de iure naturæ est de iure diuino: quia deus creauit naturam / et ius in natura: Sed non omne quod est de iure diuino est de iure naturæ ut patet in multis ceremonialibus quæ aliquo mō etiam primis prīcipliis naturalibus non erant conformia / sed magis repugnabant secūdū quid : licet non omnimode : Ideo mutata sunt et potuere mutari. Tamen ī glo. di. i. c. ius naturale. Videtur etiam ponī q̄ omne / quod est de iure diuino est de iure naturæ: sed nō ibi stricte accipitur ius naturæ: sed large uidelicet inquantū etiam natura dictat / ut pareamus deo / quoquo pacto ali quid p̄cipienti et cet. Ob quam quidem rem: quicquid fuit in lege ueteri / quod fuit secundū ius naturæ proprie acceptum non fuit mutatum nec potuit rationabiliter mutari / et modo obligat et sēp̄ obligabit / nec papa contra tale ius potest dispen sare. Vnde bene dixit hugo de sancto uictore li. i. de sacrīs par. xii. q̄ precepta alia sunt mobilia alia immobilia: mobilia sunt: quæ ad tempus sunt ordinata; immobilia autem sunt: quæ a natura ueniūt / et ad istum intellectū potest accipi quod dicit Ho

Hugo.

sti: et alii doctores super .c. constitutus de re. do.  
q̄ omne ídecens est deo ípossibile et indispensabi  
le omnino / et multo magis Papx : qui est uicari  
us dei / et eius uices agit: sed tale est illud quod est  
contra naturalē equitatem . Ob hoc etiā dicit An  
selmus / q̄ quia mendacium est contra naturam  
adeo est peccatū: ut deus non possit dispensare ut  
dicatur sine peccato quia non potest recedere a  
ueritate sua etc.

Anselmus.

Ed modo probandum est q̄ usura sit<sup>3</sup> con  
tra natutam et contra omnem naturalem  
equitatem . Quia usurarius uult uendere  
id qđ non est in rerum natura uidelicet usum re  
rum quæ non habent usum distinctum ab ipsis re  
bus / uel a consumptione ipsarum rerum / aut di  
stractione / ut est usus pecunia: et frumenti: et uini  
qa ipsorum usus est eorum cōsumptio uel distractio :  
nec alio modo possunt uti / et maxie pecunia/ quæ  
ad hoc inuenta est / ut sit media in cōmutationi /  
bus / ut dixit Aristotiles primo politorum et .v.  
Ethicorum : Vnde talium rerum usus non potest  
concedi nisi concedatur res / seu rerū dominium /  
quare isti dicuntur uelle uēdere bis unam rem / uel  
id quod non est .s. uendunt uinum et usum nini  
seorsum : Similiter tales uolunt duplē compē  
d .i.

Aristotiles.

Math.  
Luc.

Leo Papa.

sationem primo pecuniae suae iam datæ / ad domi-  
nium alterius : Deinde uolunt premium de usu il-  
lius pecuniae / quæ amplius post mutuum non est  
sua . Dicitur etiam usura contra naturam pro-  
prii contractus mutui / quia de natura et essentia  
contractus mutui est / qd sit gratuitus Math.x.gra-  
tis accepistis et gratis date. Et Luc.vi.mutuum dā-  
tes nihil inde sperates nam sicut gratia non est gra-  
tia / si non gratis datur / ut dicit Leo Papa et ha-  
betur .i.q.i.c. primo sic mutuum non est mutuum  
si non sit gratuitum : sed usurarius uolens merce-  
dem in mutuo rerum / quæ non habent usum di-  
stinctum / ubi etiam datur dominiū: peruerit na-  
tura m contractus gratuitui mutui in mercenariū:  
ubi non potest esse merces / quare agit contra na-  
tu ralem iusticiam ipsius contractus mutui .

Einde usurarius peruerit dominia rerū / et  
agit contra dominiū naturale rerum . Nam  
de natura et essentia contractus mutui est /  
qd transferatur dominiū in mutuatariū .i. in eum  
cui fit mutuum / ut etiam habetur in .l.ii. §.apella-  
ta . ff . Si certum petatur . Ethimologia etiam  
nominis id declarat : quia mutuum dicitur qd de  
meo fit tuum ; Nam proprie mutuum non fit ni-

si in rebus ubi transfertur dominium : Sed usura-  
rius post mutuum uult dominiū in rebus ubi non  
habet : et propter illud dominium violentatum  
et quod non ē / uult premiū usus: Quare inquis  
sime agit contra naturalia rerum dominia . Sed  
euertere aut peruertere naturalia et essentialia re-  
rum est solius dei / et non humanæ facultatis nisi  
inique agentis ergo etc.

Item contra naturam facit usurarius quia uult  
uendere homini res suas proprias scilicet propri-  
am industriad quia pecunia mutuata ex se nihil  
faceret et semper mortua esset : Sed si lucratur ex  
industria est mutuatarii: Sed durū est et iniustum  
ac innaturale / q̄ alicui industria sua propria sibi  
uendatur : sicut iniquum esset si sibi uenderetur  
propria domus in qua iam habet dominium: Sed  
talia facit usurarius ergo etc. Sed q̄ illa pecunia  
sit omnimode illius qui mutuo eam accepit patet:  
quia si immedieate eam ammitteret in damnum su-  
um sibi cederet / et non mutuantis tanquam rem  
propriam ammisisset quare etc.

Item usurarius agit contra naturā quia uult q̄  
res quæ non faciunt fructum naturaliter faciant  
fructū : Vnde ab Aristotle primo politoricū usu  
ra uocat partus cōtra naturā let hoc tangit ab Am

Aristoteles ,  
Ambi.

d .ii.

broſio cum dicitur uſuræ arte nequissima / et ex ipſo auro nascitur aurum / et habetur di. xxxvii. c. ſicut : Iſte profecto partus eſt partus diabolicus ; et non naturalis ymo uere iniuiiſſimus .  
Item posſet dici q̄ uſura eſt contra naturā tem- / poris : quia uſurarius uult tempus alteri uendere cum ſit omnibus comune : ut arguif extra e. c. con- / fuluit nam de confeſſione temporis uult lucrum .  
Item contra laborem quia uult premium uſurari / uſ ſine labore : Dicitur enim commuiter q̄ omni- / niſ labor optat premium extra de re. eccl. non ali. c. ad noſtram et xii. q. ii. caritatē: ſapien. iii. etiā dicitur bonorū laborū glorioſus ē fructus . Inſti. d̄ legip. pa. § . cognatos. et. ff. cōmodati . l. ſi is. § . i. ſed fructus uſurarii non eſſet bonorum laborum : ſed ſine labore contra illud apostoli . ii. thi. iii. ſi quis non uult operari non manducet . Volunt ipſi ſi triumphare / lucrari / gaudere / et hoc ex labore et ſanguine pauperum : Deinde uolunt lucrari in die pasce in die nativitatis domini in die ascen- / ſionis et nunquā ceſſant a fructu / nec celebrant di- / es ſolēnes etc. Concludendo ergo cum uſura ſit cōtra omnem equitatē naturalem non potest fieri ſine peccato : Et ideo dicendum q̄ iudeis nun- / q̄ fuit licita uſura / ſed bene pro redemptione rerū

ad se pertinentiū / et sic intelligitur illud deutero.  
xxiii. Ut etiam habetur xiiii.q.iiii. Ab illo : quia  
illis quibus possumus inferre bella possumus dare  
ad usurā: quia eo modo nostra redimimus : Ideo  
a nullo theologorum unq̄ concessum inuenitur /  
q̄ usura ut usura fuerit licita / nec etiam ab aliquo  
canonistarum timorato / quia pro ista sententia  
est hosti. i summa de usuris. §. an aliquo casu uer.  
octauo: Similiter Io. An. in. c. conquestus de usu /  
ris similiter Budrius Car. Zab. et quasi omnes in  
capitulo cōquestus. Idē ēt Ray. i summa et Arch.  
in. c. ab illo xiiii.q.iiii : Sed si quis perseveraret in  
sententia peruvicaciter dicendo q̄ deus permiserit  
iudeis usuram ut usura : quod tamen non credo /  
tūc posset ēt aliter dici iuxta illud Th. secūda secū  
de q. lxxviii. ar. primo i responsione secundi ar. et i Tho.  
tertio sententiariū distin. xxxvii. ar. ultimo: q̄ pri  
mo accipere usuram a quocunq̄ homine est sim /  
pliciter malū: debemus. n. habere omnem hominē  
quasi proximū et fratrē p̄cipue i statu euangelii  
ad quem omnes uocantur . Vnde in psalmo abso  
lute dicitur: qui pecuniam suam non dedit ad usu  
ram etc. Ezechiel xviii. qui usurā non acceperit .  
Qd' aut iudei ab extraneis usuras acciperēt nō fu  
it eis cōcessū quasi licitū / et tāq̄ res quæ fieri posset

d. iii.

Ezechiel. ]

sine mortali: sed permisum fuit ad maius malum  
uitandum ne scilicet a iudeis deum colentibus usu  
ras acciperent propter auariciam cui dediti erant:  
ut habetur Isaya xlvi. Quod autem in premi  
um promittitur fœneraberis gentibus multis: fœ  
nus ibi large accipitur p mutuo sicut ecclesiastici  
xxviiii. dicitur. Multi causa nequitiæ non fœnera  
ti sunt. i. non mutuauerunt: promittitur ergo in  
premium Iudeis abundantia diuiciarum: ex qua  
contingit q̄ aliis mutuare possunt: permisit ēt eo  
modo iudeis libellum repudii: ut euitarent homici  
dium: Aliud est enim p̄cipere uel hortari: et aliud  
permittere. Quod enim permittimus nolentes cō  
cedimus: quia malas hominum uoluntates ad ple  
num cohibere non possumus: ut dicit Chrisosto  
mus et habetur. xxxi. q. i. hac ratione: dicitur etiā  
ibidem q̄ ea quæ permittimus non approbamus.  
Ad hoc propositum facit illud quod dicitur in .c.  
cum iam dudum de preben. ubi dicitur / q̄ multa  
per patientiam tollerantur: quæ si in iudicium de  
ducerentur cassarentur: Cum autem christiani pos  
sint faciliter eorum peccatū impedire / non debēt  
inducere uel eos fouere. Alex. etiam de Alex. in  
summa ubi loquitur de usuris tenet q̄ iudei nun  
c. 17. b

quam potuerunt exercere usuras sine peccato mortali prout usuræ sunt. Et licet aliqui dicāt / q̄ saltem possunt moderari usuræ iudeorum propter.c. quanto de usuris ubi prohibentur graues et immoderatae usuræ: dicendum secundum glo. ibi q̄ nō licet in malo arguere a contrario sensu: deinde q̄ omnis usura est grauissima et immoderata: quia est rapina: ut in .c.si quis usuram .xiiii.q.i.iii. Argumentum etiam sumi potest q̄ i iudeis sit semper usura cum peccato / quia etiam post bapt. coguntur restituere sicut et res rapinosæ: Nam post abolitionē peccatorū per baptismū alia iuste acquisita ēt si ne peccato possunt retineri sed non usuræ: quia radix putrida et cum peccato fuit ergo et rami infecti et cætera. Inno. de trans. in capitulo finali dicit q̄ quātum ad cōmittendum peccatum mortale uel remanendū in illo / in hiis / quæ pēdēnt a iure naturali in lege diuina / et euangelio contento: Papa non potest dispensare: et ponit exemplum plū de.c.super eo de usuris: Papa ergo non dispensat contra ius diuinum ubi est peccatum mortale. Similiter nec cōtra ius posituum quando etiam non cessat iustitia et iniq̄uitas naturalis et cetera.

d .i.iiii.

Secunda dubitatio principalis.

**S**ecundum dubium an cōmunitas aliqua posse sit cōducere iudeos ad exercendum usuras si ne peccato cōmunitatis idest ipsorum hominum ipsius rei publicæ conducentium.

**S**olutio huius dubii patere pōt ex p̄cedētibus quia coopari scienter peccato mortali ē mortale secūdū omēs theologos et doctos canonistas i quod elicit ex dictis Pau. ad ro.i. Nō solum qui faciunt sed et qui consentiunt facientibus digni sūt morte: ergo q̄to magis q̄ inducūt. ubi gl. quā allelīgat Th. scđa scđe. q.x. ar.x. i .i. ar. ubi tractat de tollerantia: quā habere debemus circa ritus iudeorum et allorū infidelium dicit q̄ peccato consentiente unusquisq; dicendus est/ qui nō prohibet cum prohibere ualeat: si non prohibere est malum quāto maius malum erit /consentire uel cooperari peccato ? quod consentiens peccet patet. x. q. iii. Qui consentit i et tribus capitulis sequētibus expresse .

Primo ergo dicendum est q̄ conducentes quia ex conductione oportet q̄ pacificantur de solutione usurarum q̄ non sunt liberi ab excomunica tione / et ex consequenti a peccato mortali ut per

Pau.

clemē.i. de usuris : Secundo q̄ conducentes pec  
cent mortaliter satis clare argui potest : quia faci  
unt contra preceptū ecclesiæ extra de usuris post  
miserabilem : Vbi ecclesia precipit principibus se  
cularibus q̄ faciat restituere usuras / quas accipiūt  
Iudei / et q̄ alias interdicatur eis communicatio  
omnium rerum cum Christi fidelibus etiam sub  
pœna excommunicationis precipit ecclesia : Ta  
lia precepta secundum theologos et timoratos ca  
nonistas semper obligant ad mortale quāto magis  
peccarent conducentes ? Secundum theologos si  
principes / uel alii rectores cogunt christianos ad  
soluendum usuras Iudeis : Ipsī tenentur ad resti  
tutionem : Sed tales conductores ex tali conduc  
tione cogent in futurum soluere : quia iam se obli  
gant / et obligarent exconventionibus / ergo faci  
unt se participes futuræ rapinæ : quia usura dici  
tur rapina ut habetur xiiii.q.iiii.c. Si quis : et est  
textus Ambrosii notabilis / et exconsequenti pec  
cant mortaliter quia rapina non potest esse sine  
peccato mortali . Guil.dicit q̄ domini qui per  
mittunt usuras exigi a iudeis in terris eorum : q̄  
ipsi tenentur ad restitutōnem : quia cum possint  
non compellunt ipsos ad restituendum / cum ad  
eos pertineat et teneantur ad preceptum quod ha

Ambro.

bent ab ecclesia : quod non seruando monstrant  
se habere interpretatum consensum : iuxta illud  
non caret scrupulo concessionis occultæ : qui ma-  
nifesto facinori non desinit obuiare extra de homi-  
cidiis sicut dignū. §.iii. et ex consequenti peccant  
mortaliter ergo a fortiori quanto magis qui cōdu-  
cunt conuentionem faciendo de usuris. Et cum  
mihi a secularibus frequentius dicitur / q̄ fit hoc  
ad uitandum maius detrimentum eorum / et pro-  
pter multa commoda: quæ proueniunt pauperib⁹  
ipsius ciuitatis et cætera. Quibus sancte est dicē/  
dum q̄ nunquam malum culpæ agendum est / ut  
uitentur omnia mala mundi temporalia / nec etiā  
spiritualia dummodo remaneat ibi culpa / et dei  
offensa: Nec est aliquo pacto credendum aut arbi-  
trandum / q̄ mala debeamus evitare / aut bona de-  
beant nobis prouenire per offendam dei secundū  
omnes sanctos doctores: quia esset inferre: aut qđ  
deus non esset omnipotens: quia nō posset succur-  
rere nolentibus etim offendere: aut q̄ non cerne/  
ret omnia / quia non posset intueri talem bonam  
mentem et innocentem: quæ propter eius gratiam  
nollet committere peccatum ueniale / Aut q̄ non  
esset sanctus / quia non delectaretur tali tantaq;  
innocentia / eiq; succurreret: sed magis succurre /

ret scelestis hominibus quasi delectaretur eorum  
**offensa** / et iniuitate: et hoc satis argui potest eti  
am ex textu de usuris.c.super zo. ubi dicitur q̄ sa  
cra scriptura prohibet pro alterius uita mentiri / et  
multo magis prohibendum est ne quis pro redimē  
da uita captiui usurarum criminē inuoluatur .

c Onclusio h̄c theologorum uera est et mal  
xime Tho.secunda secūde.q.xxxxiii.ar.vii.  
in solutione.y.argumenti.et Pe.de pal.in.iiii.di.  
xyii.ar.i.in .vi.quesito.conclusione prima q̄ nul  
lum malum culpæ etiam uenialis ut evitetur mor  
talia est eligendum:quia dei offensa non est eligē  
da / nec cadit sub electione : nec etiam est aliquo  
modo debita;ut ēt evitetur multa mala. unde Au  
gu.in li.de mendacio et habetur .xxii.q.ii.c. pri  
mo.dicit q̄ omne genus mendacii q̄ alicui pdest  
corporaliter / et spiritualiter / et nulli obest etiam  
pro illa utilitate faciendum non est. Vnde conclu  
dit augustinus q̄ ad sempiternam salutem nullus  
ducendus est opitulante mendacio: h̄c etiam sen  
tentia habetur a magistro sententiarum in.iii.di .  
xxxviii. et confirmatur a beato Bonauentura / et a  
reliquis theologis: Augustinus similiter super psal  
mos et habetur.xxii.q.ii.Ne quis dicat q̄ bonis et  
scis uiris falsū dicere iuenitur esse cōcessum idem

etiam habetur ubi supra.c. faciat Si ergo ista non licent: quanto minus licebit usuræ cooperari cum semper usura sit peccatum mortale.hoc etiam argui posset ex.c. non magno ne.cle. uel mo. et cetera.

Host. etiam et Io. An. in.c non magno ne.cle. uel mo. dicunt aut aliquid est prohibitum lege diuina / ut mendacium / et usura / et non admittitur compensatio de minori malo ad maius malum : nec de malo ad maius bonum et hoc per.c.super eo de usuris et xxii. q. ii. c. i. Aut est prohibitum lege canonica: et tunc pot fieri compensatio auctoritate Papæ : cum possit tollere peccatum quod constitutum canonica induxit: ut in .c. proposuit de con. preben. etc : Ecclesia ergo non potest consentire malo culpa: et multominus cooperari quod est prohibitum lege diuina in quo semper remanet maius peccati et hoc etiam ut uitetur maius malum uel quod sequatur aliquod aliud bonum ut patet expresse di. xiii. c. quod ait : licet possit tolle rare ecclesia sub dissimulatione causa maioris mali uitandi uel causa maioris boni quod inde ori potest et de hoc est glosa quam sequitur Archidiaconus et Iohannes de fant. distinctioe quarta capitulo Deniq; in uerbo uenia : uide etiam glossam notabile distic .iii. c. finali. Et si quis diceret

Aerbi.

q[uod] ecclesia tollerat ritus iudeorum / et prohibet fi  
deles ne eos ipediant ut habeat expresse di. xxxxv.  
c. Qui sincera. Dicendum q[uod] ecclesia hoc impedit  
causa maioris boni quod exinde sequitur ut. s. p  
hanc viam possimus eos lucrari / et facilius cōueri  
tantur ad ueritatem / ut dicitur in supradicto .c.  
qui sincera. Deinde quia ueritas nostræ fidei in li  
bris ipsorum uelata et i ritibus prefigurata nostris  
oculis lucide demōstatur et fidei nostræ testimoni  
um roboratur ut dicit Augustinus. xviii. de ciuita  
te dei. c. xxxxv.

Agister Gerardus de senis ordinis heremij /  
tartum examinat hoc dubium titrum iura debeāt  
concedere cōtractum usurarium / propter aliquod  
bonum quod īde oriatur uel propter aliquod ma  
lum : quod inde uitetur: quod soluit hoc modo  
distinguendo / et allegatur a Ioh. an. in mercuriali  
bus in regula peccatum .in ar. iii. Dicit enim q[uod] p  
missio accipi potest tribus modis. Vno modo pro  
ut est simplex permissio indulgens pœnam .et hoc  
casu ecclesia permittit malum / ut evitetur maius  
malum ut in dicto. c. deniq[ue] iuncta glo. ī uerbo uel  
nia. di. iiii. et in. c. Si qua monacharum iuncta gl.  
xxvii. q. i. Et dicit ibidem Ioh. an. q[uod] talis pmissio  
ideo dicitur simplex quia tantūmodo pœna indul  
getur / non autem culpa minuitur. Secundo mo

Permissio po  
test accipi  
tribus modis

do accipi potest permissio uel concessio prout idem  
est q̄ permissio tollens impedimentum secundum  
quē modū iudei inter xpianos permittuntur ab ec  
clesia in obseruantia sui ritus ut in.c. Qui sincera  
xxxxv .d. et ista permissio differt a prima: quia nō  
solum ecclesia permittit malum. s. obseruantiam ri  
tus iudeorum subtrahendo cōminationē / uel in /  
flictionem pœnæ / sicut facit permissio prima / sed  
etiam remouendo impedimenta christianorū / qui  
uellent ipedire iudeos ne obseruarent suos ritus ut  
in.c. Sicut de iudeis . Tertio modo potest acci  
pi concessio prout idem est q̄ permissio præstans  
iuuamen: secundum quem modum ecclesia quan  
doq; permittit clericum occidi a ptate seculari / et  
hæc permissio excedit secūdam: sicut secunda pri  
mam: quia in ista tertia permissione non solū sub  
trahitur cōminatio aut inflictio pœnæ: quæ posset  
per occisionē clerici infligi / sicut fit in prima per  
missione. Sed etiam tollit impedimentum per qđ  
posset occisio clerici impediri: quemadmodū fit in  
secūda permissione. Immo ultra hec duo præsta  
iuuamen i ista tertia permissione quod non fit in  
aliqua precedentiū: Nam in nulla ipsarū posset ec  
clesia iuuamen p̄stare : quia non potest adiuuare  
inalū culpæ et offensæ dei: et qui aliter sentiunt be

strialiter sentiunt : Sed ecclesia præstat iuuamen /  
quia ipsum degradat et ponit in manibus iudicis  
secularis ut crucietur uel etiam occidatur iuxta il  
lud Apostoli.i.cor.v. Tradens huiusmodi homi  
nem sathanæ in interitū carnis ut spiritus eius salt  
uus fiat in diem domini nostri Ihesu Xpi ut in .c.  
nouimus de uerborum signifi.

Apostolus.

e X his patet q̄ tribus modis potest accipi cō  
cessio uel permissio / primo quādo propter  
maius malum uitandū malum toleratur sub dissim  
mulatione: et hxc dicitur comparatiua permissio/  
quia solum pœna indulgetur / Cum talis sic faci  
ens non puniatur ut est de meretricibus : Tamen  
non minus iuoluitur criminis propter talem per  
missionem : Secundo modo accipitur concessio  
uel permissio / quando ecclesia tollit impedimen  
ta impedientia malum fieri propter bonū/ quod  
inde sequi speratur ut in obseruatione ritus Iude  
orum. Tertio modo quando ecclesia præstat iu  
uamē : Et sciendū q̄ ecclesia hoc tertio modo nō  
potest cōcedere uel pmittere nisi illud quod pmit  
titur siue conceditur sit licitū ut est occisio clericī  
pp delictū traditi curiæ seculari: nam hoc est licitū  
quia maleficia non debent remanere impunita ut  
in .c. ut fame de sen .ex. et.l. ita uulneratus. ff. ad  
l. Aquiliam: Quamobrem concludendum est

Aug.

ita q̄ uidelicet ecclesia non potest dare licentiam  
præstando iuuamen faciendi malum culpx ut í.c.  
legatur. xxiiii. q. ii. unde ecclesia non posset dare li-  
centiam præstando iuuamen : ut iudei seruarent  
ritus suos ut dicitur in glo. iii . c . Qui sincera.  
xxxxv. di. unde August. contra p̄minianum dicit:  
q̄ quis malis sociatur quādo cum eis malū cōmit-  
tit : aut cōmittentibus fauet ut habetur. xxv. q. iiiii  
Ita plane et in fine capituli ita concludit Aug. ubi  
malum nō potest corrigi uel puniri uel aliter ob-  
uiari illa duo retenta semper reseruant hominem  
innocentem et īcorruptum a peccato. s. ut nec ma-  
lum quis faciat: nec approbet factum: sed præsta /  
re iuuamen iudeis ad usuras exercendas esset faue-  
re malo quod non licet et cetera.

Oncludit ergo ibi suprascriptus frater Ge-  
rardus. et Ioh. an. q̄ nec ius naturale nec  
diuinum potest permittere contractū usu/  
rarium/ propter aliquod maius malū uitandū uel  
ppter bonum/ quod inde oritur, quia et ius natu-  
rale / et diuinum prohibent usuras. Nec etiam ius  
canonicum aliqua suprascriptarum p̄missionum/  
quia pœna cōminatur et infligit facientibus dictū  
contractum/ ut in. c. q̄q. li. vi. de usuris. sed multo  
minus aliquis dominus temporalis / uel aliqua cō-

munitas/ quæ sunt minoris auctoritatis : et si alii  
quas uideantur Papa permettere usuras / ut in .c:sa  
lubriter de usuris/ et alibi dicendum q̄ illæ nō sūt  
proprie usuræ licet uideantur similes; Ius autem ci  
uile permittit permissione primi modi. s. non infli  
gendo pœnam : propter maius malum uitadum .

Ergo hæc est theologorum et canonistarum  
uera et indubitata conclusio / licet enim multa ad  
duci et allegari possent: sed quia nōnulli propter  
dictum Augustini in libro de adulterinis cōiugiis  
quod etiam habetur .xxxiii .q .ii .c . Si quod uerius  
audient dicere q̄ de duobus malis culpæ minus est  
eligendum quia Augusti . uidetur dicere q̄ si quis  
uult facere homicidium uel adulterium q̄ potius  
faciat adulterium q̄ homicidium: Quibus respon  
dendum est q̄ August . loquitur conditionaliter :  
uidelicet q̄ si quis cogeretur ad aliquod istorū q̄  
magis deberet facere adulterium: sed illius conditi  
onalis prima pars non est concedenda . quia nemo  
liberi arbitrii cogitur ad peccandum : ergo et con  
sequens non est concedendum : Similiter Augu  
stolebat dicere q̄ si quis uellet alterū istorum face  
re q̄ magis deberet facere adulterium: Sed nullus  
debet uelle perpetrare aliquod istorum et cetera :  
Sed bene stante mala uoluntate ad alterum istorū

e .i.

tunc faciat minus : sed illa mala uoluntas est deponenda . Quare perstat conclusio firma q̄ maium culpæ paruum non est perpetrandum / ut uitetur maius et ex consequenti nec usuræ ,

REI M. RIBOM ITINQ . FINIS .

D. Celsi Veronensis Cano. Regul. ad Reuerendissimū , D. Cardinalem Papie , de morte . S. Sixti Cardinalis Epi.

EVEREndissime domine Ex litteris benedicti Maphei nepotis mei cognoui id quod etiam sine litteris intelligebam . Et tuæ Reuerendissimæ . D . erga me studium eximum et iudicium eiusdem in me singulare Doleo pfecto ! neq; me parem pro tuis in me meritis gratiam refferre posse : Neq; ea in me esse quæ opinioni tuæ / iudicioq; respondeant . Tuam semper Reuerendissimā dominationem laudis meæ cupidam dignitatisq; cognoui . Itidem ago / ubiq; locorum et gentiū / de tua excellenti virtute / ac gloria . Huiuscæ rei habeo q̄ plurimos locupletissimos atq; dignissimos testes . Verum de his alias . Quid autem mi Reuerendissime domine in hac tam mi

sera et falaci uita admodū cupere debeamus: non  
satis intelligo: quid uero timendum sit: plane co p  
gnosco. Quotidianie noua oboriuntur exempla qui  
bus instruimur: nihil esse hac uita miserius: Nam  
cum nuper de obitu Cardinalis sancti Sixti ex mul  
torum litteris et nuntiis accepissem: Cœpi mecum  
cogitare uariam rerum humanarum sortem: mira  
bilemq; simulac miserabilem hominis istius cōdi  
tionem fuisse cognoui: Nam qui paulo āte in ui  
ta fœlicissimus omnium esse putabatur. in morte  
miserimus omnium apparuit: quando ea quæ ui  
uenti gloriam et splendorem attulerunt. morienti  
pœnam et cruciatum inferrent: et ea quæ dum ani  
te possiderentur iucūda et dulcia esse uidebātur:  
eadem dum relinquenterentur tristia et amara esse p  
barentur: Quid enim in hoc biennio huic quod  
opraret: aut uiuenti defuit: aut morienti profu  
it: Heu miseram nimis hominis conditionem: dū  
ea quæ in uita tanto labore parantur ad uolupta  
tem: in morte tanto dolore relinquuntur ad pœnā:  
Et quæ prius longis erant quesita uigiliis ut essent  
oblectamento / breui tempore magno sunt amissa  
tormento. Nihil huic homini adiumenti dignitas:  
nihil splendor: nihil aurum: nihil argentum: nihil  
uasa preciosa: nihil opes: nil nitor gemmarum: nil

fauor autem popularis: nil turba clientum: nil denique principatus tamē præsidio studioq; ualatus prius attulit salutem: Sed e contrario quum corpus sanguinis doloribus cruciatum torqueretur: Hæc omnia quoniam relinquenda erāt / animū quoq; dixit ac cruentibus morsibus lacerabant: ut mihi perfecto fortunatissimi esse videātur: qui nullā cum rebus tam cito perituriis sortem acceperunt. uel acceptam uirtute ipsa contemptā penitus abiecerūt: Sic enim fit ut animus noster et adhuc in corpore positus nullis rerum presentiū delinitus illecebris rerum æternarum cogitatione pascatur: Et dū mi grat a corpore nullis uinculis irretitus / aut fardib; inquinatus liber ac mundus euoleat in superna / et nullo dolore relinquat: quod mīro ardore cōtempt̄ psit: At me quidē iampridem totum in hanc cogitationem erectum: cum uariis rerum humanarū multiplicesc; casus: Tum uiri de quo dico tam repentini tamq; insperati euentus subitaq; procellæ confirmarunt: Quid enim? floruit hic paucis diebus plusq; mea sententia assequutus est / q; uel ulli sperare aut ei fas esset optare: Quandoq; dem ex loco tam humili tamq; abiecto. ad tam ex cellentis gloriæ culmen altitudinēq; potentir; euectus est. Et ecce mi pater et domine dum huic ad

uota succedunt omnia partum dico immo dum uo-  
ta successu rerū superant̄ dum nihil optat/qd' non  
speret , dum nihil speret quod non querat : nihil  
querit / quod non assequatur : Dum ei cuncta ar-  
rident in ipso primordio iuuentæ in medio floren-  
tis gloriæ cursu / subita atq; insperata morte corri-  
pitur : O fluxā rerum humanarū labilemq; natu-  
ram : O falacem uitæ spem : O miseram conditio-  
nem : Quid est quod animos nostros excitet aut  
allitiat ad hanc rerum transeuntium ac tam cito  
labentis uitæ gloriam appetendā : quando uel res  
nobis / uel nos rebus / tam inopinato euētu / tam  
q; subito casu subtrahimur ? Igitur humanissime  
princeps ab his rebus quæ tam cito pereunt meus  
auocandus est animus : atq; illic spes mea cogitati-  
oq; locanda est : Vbi uita perpetua. Vbi pax æter-  
na . Vbi immortalis beatitudo . Vbi sempiterna  
fœlicitas . Vbi deus noster est premium ac uita / et  
merces nostra magna nimis : Hæc tuæ Reueren.  
Do.scripsi non quod aut ad contemptū uitæ præ-  
sentis / aut ad spem futuræ eam accendendam in /  
flammandamq; putarem : Cum uita tua perfecta  
quædam norma integratatis: sanctitatisq; existat .  
Sed ut magis hæc Epistola esset monumentū mei  
in te præcipui amoris / ac singularis obseruantia

intelligeresq; tuam Retierendissimam Dominati  
onem mecum in studiis i mecum in cogitationi  
bus / mecum et domi / et publice cum suauissima  
memoria uersari . Cui me unice trado / atq; com  
mendo. Ex Bononia xii. kallendas Februarias.

**Epistolion Philippi Beroaldi .**

Puscula nō parum multa cum elegantia  
nitore: tum sententiarum splendore fulge  
tia laudibus extollere consueuimus. Inter  
quæ reponi merito potest libellus hīca Venerabi  
li Viro Celso nuperime editus: Qui non minus  
est eruditione q̄ religione monstrabilis: multum  
in hoc nitoris: nec minus doctrinæ īest: Lector  
lege lētaberis . Vale .

Opusculum hoc Bononiæ Impressum est p Pla  
tonem de Benedictis librorum excusorē Anno  
Domini .M .CCCC .LXXXIII .Quin  
to kallendas Iulias .

REGISTRVM.

a . b . c . d . e .

Omnes sunt quaterniones Ultimus vero  
constat ex duobus folijs .

..



Obsequium proponit iustitiam et regem  
bonorum regnorum et gloriarum. Anno  
Domini M. CCC. LXVIIII. Junii  
20. Julianus Iustinus.

## REGISTRUM.

a. b. c. d. e.

Quae sunt distinctiones - quae sunt  
cognitiones quae sunt



iv



